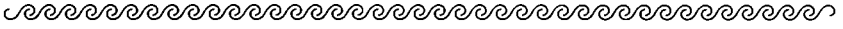


नवरात्र नित्यपाठ





NAVARĀTRA NITYAPĀTHA

नवरात्र नित्यपाठ

ನವರಾತ್ರ, ನಿತ್ಯಪಾಠ

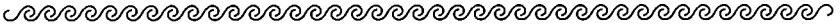
A Compilation of Stotras from

“Shrī Durgā Saptashatī”

and

“Devī-Aparādhakshamāpana Stotram”





Published by :
Shri Chitrāpur Math
Shirālī, Uttara Kannada Dist.
PIN-581 354 Karnātaka, INDIA

1st Edition 2003
Guru Pūrnimā
2nd Edition 2003
3rd Edition 2005
Navarātri
4th Edition 2015
Navarātri

Copies : 500

Cover Photo Credit : Shri Kishan Kallianpur

Designed, Printed by :

Urvee - Novel Creations, Bangalore
Tel : 98804 80646, 98456 26136
E-mail : nandini_karanje@yahoo.co.in



SHRĪ CHITRĀPUR MATH, SHIRĀLĪ
North Kanara 581 354

॥ प्रार्थना ॥

॥ श्रीचित्रापुरमठः श्रीवल्ली ॥

॥ सभा-प्रारम्भ-प्रार्थना ॥

दक्षिणास्यसमारम्भा शङ्कराचार्यमध्यमा ।

अस्मदाचार्यपर्यन्ता स्मर्या गुरुपरम्परा ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।

नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।

सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।

व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥

परिज्ञानाश्रम श्री गुरु शङ्कर परिज्ञानाश्रम शङ्कर सदगुरु ।

केशव वामन कृष्ण पाण्डुरङ्ग आनन्द परिज्ञान गुरु ।

सद्योजात शङ्कर सदगुरु ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ॐ सह नावतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ सभा-समाप्ति-प्रार्थना ॥

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ।

अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

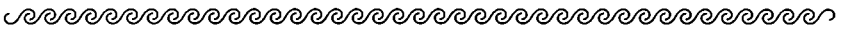
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

नवरात्र नित्यपाठ

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
i)	Foreword	i
ii)	Photo of Devi	
१)	देवीकवचम् (चण्डीकवचम्)	1
२)	अर्गलास्तोत्रम्	13
३)	कीलकस्तोत्रम्	18
४)	तन्त्रोक्तं-रात्रिसूक्तम्	22
५)	महिषान्तकरी-सूक्तम्	25
६)	अपराजितास्तोत्रम्	34
७)	नारायणी-सूक्तम्	39
८)	देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	47





ನವರಾತ್ರ, ನಿತ್ಯಪಾಠ

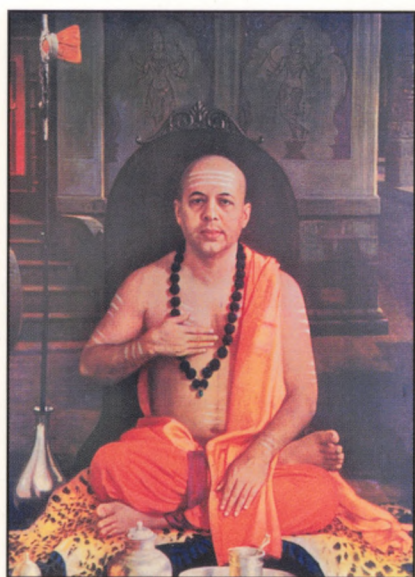
ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ

ವಿಷಯ	ಪುಟ
೧) ದೇವೀಕವಚಂ (ಚಂಡೀಕವಚಂ)	52
೨) ಅರ್ಗಲಾಸ್ತೋತ್ರಮ್	57
೩) ಕೀಲಕಸ್ತೋತ್ರಮ್	60
೪) ತಂತ್ರೋಕ್ತಂ-ರಾತ್ರಿ, ಸೂಕ್ತಮ್	61
೫) ಮಹಿಷಾಂತಕರೀ-ಸೂಕ್ತಮ್	63
೬) ಅಪರಾಜಿತಾಸ್ತೋತ್ರಮ್	67
೭) ನಾರಾಯಣೀ-ಸೂಕ್ತಮ್	70
೮) ದೇವ್ಯಪರಾಧಕ್ಷಮಾಪನಸ್ತೋತ್ರಮ್	75

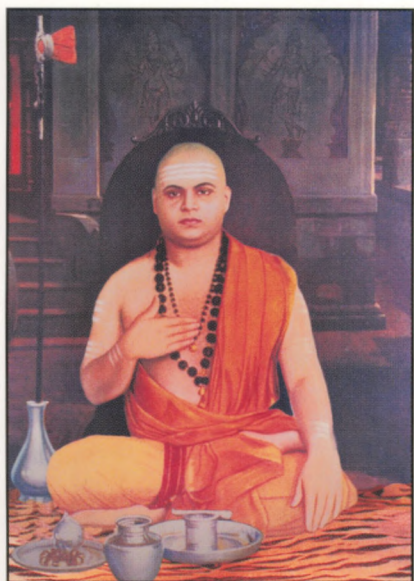




PARAMA POOJYA PĀNDURANGĀSHRAMA SWĀMIJI



PARAMA POOJYA ĀNANDĀSHRAMA SWĀMIJI



PARAMA POOJYA PARJNĀNĀSHRAMA SWĀMIJI III



PARAMA POOJYA SADYOJĀTA SHANKARĀSHRAMA SWĀMIJI

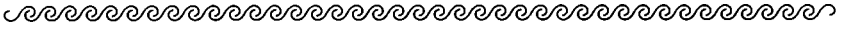
FOREWORD

Copy for the introductory narration of the cassette of selected chants from the 'Shrī DURGĀ-SAPTASHATĪ'

Whether you worship Her as Chāmuṇḍa or Chaṇḍī, call out to Her as Shivānī or Bhavānī, propitiate Her as the knowledge-imparting Saraswatī or the prosperity-showering Lakshmi, MĀ DURGĀ is the Very Embodiment of Cosmic Energy. Adorned by the fiery effulgence of the holy trinity of Brahmā, Vishnu and Shiva and armed with celestial weapons from various Gods in the pantheon, the mission of this Invincible Mother Eternal is to root out all evil, to vanquish the forces that generate darkness and disfiguration of the human spirit. She is, thus, the Ultimate Essence of all Truths and the 'end' or goal of the search of every sādha.

Navarātri - or the nine-day period which begins, in the Hindu calendar, on the first day of the Shukla Paksha of the month of Ashwin (which falls roughly between mid-September and October-end) - is believed to be the auspicious time when Mā Durgā visits the earth and is welcomed by her devotees, with utmost piety and pomp. Along with the rituals, which are an invaluable tool for purifying the mind, the traditional worship of Durgā, during Navarātri, included the ceremonial chanting of Shrī Durgā Saptashatī - a glorious documentation of the powers and triumphs of this beloved Goddess, taken from the Mārkaṇḍeya Purāṇa.

However, enmeshed as we are, today, in the sticky web of a demanding routine, in which there is always "too much to do and too little time", reading the Saptashatī in its entirety, becomes a daunting task. This is why our thoughtful Sadguru decided to record some of its most inspiring and empowering chants. He first circulated a few sample copies among Sādhakas in Mumbai, Bangalore and Pune. Their response was overwhelming. Just as a mother always makes sure that all her children get an equal share of her love and attention, our Pūjya Swāmiji felt that all



members of the devout Chitrāpur Sāraswat Samāj should also taste the nectar of these immortal verses and reap their spiritual benefits. That is how this sacred compilation of select shlokas from the Saptashatī came about... a compilation that becomes all the more precious because it comes to you in a voice resplendent with flawless diction, melody and the rare insight of an enlightened tapasvī - the voice of our Beloved Guru - Parama Pūjya Sadyojāt Shankarāshram Swamiji...

The compilation begins with the powerful Devī-kavacham, which is, truly, like a spiritual coat of arms reassuring the devotee that Mā Durgā, in Her myriad forms, will protect him from the top of his head to the tips of his toes, thus strengthening him in body, mind and spirit, as he moves forward in his quest for liberation, in his journey towards the Ultimate.

In the Argalā-stotram, the sādḥaka invokes Chaṇḍikā and implores that She bestow upon him the awareness of the beauty of his True self so that he may be successful in triumphing over his six self-defeating, 'resident' foes - namely lust, anger, greed, attachment, arrogance and envy.

The Kīlakam teaches the bhakta to surrender his 'all' at the feet of the Goddess and then receive it only as Her prasāda. This opens the floodgates to Her Grace, ushering in material prosperity and promoting spiritual growth.

While the select shlokas from Shri Durgā Saptashatī extol the many facets of the Glory and Greatness of the Goddess who is Bliss Incarnate, the concluding piece - the Devyaparādhakshamāpana stotram - is a moving plea for forgiveness, composed by the divine genius of Ādi Guru Shankarāchārya. Posing as an easygoing and petulant child, he insists that She must condone his limitations and gather him into Her merciful fold. . . because all that he is asking for is the ability to remember Her constantly and even more so, because, while there may be many faulty sons, whoever has heard of a bad, or uncaring Mother?..





॥ अथ देवी कवचम् ॥

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा
देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरोबीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्,
श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।

यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह

॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।

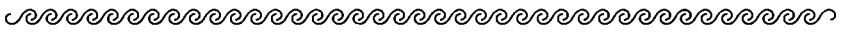
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने

॥ २ ॥

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेयजी ने कहा— पितामह! जो इस संसार में परम गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये ॥१॥

ब्रह्माजी बोले—ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे श्रवण करो ॥२॥ देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मूर्ति को कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवीं दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है।

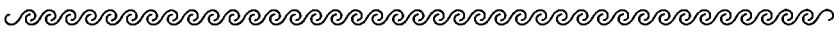


प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी । तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्	॥ ३ ॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च । सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्	॥ ४ ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः । उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना	॥ ५ ॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे । विषमेदुर्गमेचैव भयार्ताः शरणं गताः	॥ ६ ॥
न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे । नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि	॥ ७ ॥

देवी के छठें रूप को कात्यायनी कहते हैं । सातवाँ कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है । नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है । ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान् के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं ॥ ३-५ ॥ जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फँस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता । युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती । उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती ॥ ६-७ ॥

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है । देवेश्वरी! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसंदेह रक्षा करती हो ॥८॥ चामुण्डा देवी प्रेत पर





यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।

ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।

ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।

लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।

ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ११ ॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।

नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥

आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसे पर सवारी करती हैं। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड पर ही आसन जमाती हैं ॥९॥ माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती हैं। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान् विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमल के आसन पर विराजमान है और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं ॥१०॥ वृषभ पर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं ॥११॥ इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत-सी देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं ॥१२॥ ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई और भक्तों की रक्षा के लिये रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त





दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।

शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३ ॥

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।

कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १४ ॥

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।

धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ १५ ॥

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।

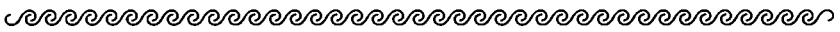
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १६ ॥

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।

प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ १७ ॥

और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना-यही उनके शस्त्र-धारण का उद्देश्य है ॥१३-१५ ॥ (कवच आरम्भ करने के पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये-) महान् रौरूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान बल और महान् उत्साहवाली देवी! तुम महान् भयका नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥१६ ॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करे। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करे ॥१७-१८ ॥

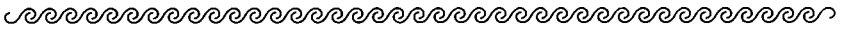




दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी । प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी	॥ १८ ॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी । ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा	॥ १९ ॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना । जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः	॥ २० ॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता । शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता	॥ २१ ॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी । त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके	॥ २२ ॥

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान-कोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करे। ब्रह्माणि! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवीदेवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करे ॥१९ ॥ इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डादेवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करे। जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करे ॥२० ॥ वाम भाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करे। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करे। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करे ॥२१ ॥ ललाट में मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौहों का संरक्षण करे। भौहों के मध्यभाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करे ॥२२ ॥ दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूलभाग की रक्षा करे ॥२३ ॥ नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओंठ





शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोद्धारवासिनी । कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी	॥ २३ ॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका । अधरेचामृतकला जिह्वायां च सरस्वती	॥ २४ ॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका । घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके	॥ २५ ॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला । ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी	॥ २६ ॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी । स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी	॥ २७ ॥

में चर्चिकादेवी रक्षा करे । नीचे के ओंठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करे ॥२४ ॥

कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठप्रदेश की रक्षा करे । चित्रघण्टा गले की घाँटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करे ॥२५ ॥ कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमङ्गला मेरी वाणी की रक्षा करे । भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) में रहकर रक्षा करे ॥२६ ॥ कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करे । दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करे ॥२७ ॥ दोनों हाथों में दण्डिनी और अँगुलियों में अम्बिका रक्षा करे । शूलेश्वरी नखों की रक्षा करे । कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करे ॥२८ ॥



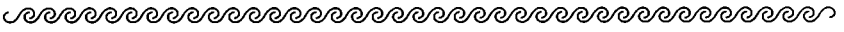


हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च । नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी	॥ २८ ॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी । हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी	॥ २९ ॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा । पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी	॥ ३० ॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी । जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी	॥ ३१ ॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी । पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी	॥ ३२ ॥

महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करे । ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करे ॥२९ ॥ नाभि में कामिनी और गुह्यभाग की गुह्येश्वरी रक्षा करे । पूतना और कामिका लिङ्ग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करे ॥३० ॥

भगवती कटि भाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करे । सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करे ॥३१ ॥ नारसिंही दोनों घुट्टियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठभाग की रक्षा करे । श्रीदेवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करे ॥३२ ॥ अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखायी देनेवाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करे । रोमावलियों के छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करे ॥३३ ॥ पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की रक्षा करे । आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा





नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।

रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।

अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।

ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।

अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥

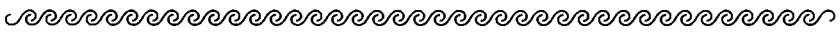
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।

वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ३७ ॥

करे ॥३४॥ मूलाधार आदि कमल-कोशों में पद्मावती देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करे । नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करे । जिसका किसी भी अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करे । ॥३५॥

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें । छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करे ॥३६॥ हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करे । कल्याण से शोभित होनेवाली भगवती कल्याण शोभना मेरे प्राण की रक्षा करे ॥३७॥ रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श-इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करे तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे ॥३८॥ वाराही आयु की रक्षा करे । वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा





रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।

सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेत्रारायणी सदा ॥ ३८ ॥

आयू रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ।

यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ३९ ॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।

पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्या रक्षतु भैरवी ॥ ४० ॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।

राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ ४१ ॥

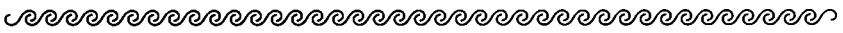
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।

तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥

चक्रिणी (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे ॥३९॥ इन्द्राणि! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे ॥४०॥ मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकरी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करे ॥४१॥

जयन्ती देवी! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो ॥४२॥ यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाय - कवच का पाठ करके ही यात्रा करे। कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहाँ भी जाता है, वहाँ वहाँ उसे धन-





पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।

कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति

॥ ४३ ॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्

॥ ४४ ॥

निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्ग्रामेष्वपराजितः ।

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्

॥ ४५ ॥

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः

॥ ४६ ॥

लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है । वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस-उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है । वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलनारहित महान् ऐश्वर्य का भागी होता है ॥४३-४४ ॥ कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है । युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है ॥४५ ॥ देवी का यह कवच देवताओं के लिये भी दुर्लभ है । जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता । इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु से रहित हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है ॥४६-४७ ॥ मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं । कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, साँप और बिच्छू





दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७ ॥

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ ४८ ॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४९ ॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ५० ॥

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।

ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ ५१ ॥

आदि के काटने से चढ़ा-हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बननेवाला कृत्रिम विष-ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई असर नहीं होता ॥४८॥ इस पृथ्वी पर मारण-मोहन अभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मन्त्र, यन्त्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं । ये ही नहीं, पृथ्वी पर विचरनेवाले ग्राम देवता, आकाशचारी देवविशेष, जल के सम्बन्ध से प्रकट होनेवाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्नकोटिक देवता अपने नाम के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरनेवाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं । कवचधारी पुरुष को राजा से





नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।

मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ५२ ॥

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।

जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ ५३ ॥

यावद्भ्रूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ ५४ ॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ ५५ ॥

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥३ॐ ॥

॥ ५६ ॥

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

सम्मान-वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है ॥४९-५२ ॥ कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डी का पाठ करता है, उस की जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है ॥५३-५४ ॥ फिर देह का अन्त होने पर वह पुरुष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परम पद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है ॥५५ ॥ वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है ॥५६ ॥



॥ अथार्गलास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीमहालक्ष्मीदेवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥

ॐ चण्डिकादेवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेय जी कहते हैं - जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा-इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो ॥१॥ देवी चामुण्डे! तुम्हारी जय हो । सम्पूर्ण प्राणियों की पीड़ा हरनेवाली देवी! तुम्हारी जय हो । सब में व्याप्त रहनेवाली देवी! तुम्हारी जय हो । कालरात्रि! तुम्हें नमस्कार हो ॥२॥ मधु और कैटभ को मारनेवाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देनेवाली देवी! तुम्हें नमस्कार है । तुम मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश (मोह-विजय तथा ज्ञान-प्राप्तिरूप यश) दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥३॥ महिषासुर का नाश करनेवाली तथा भक्तों को सुख देनेवाली देवी! तुम्हें नमस्कार है । तुम रूप दो, जय दो, यश दो



महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥

और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥४॥ रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥५॥ शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥६॥ सबके द्वारा वन्दित युगल चरणोंवाली तथा सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करनेवाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥७॥ देवी! तुम्हारा रूप और चरित्र अचिन्त्य हैं। तुम समस्त शत्रुओं का नाश करनेवाली हो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥८॥ पापों को दूर करनेवाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारे चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥९॥ रोगों का नाश करनेवाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें रूप





स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥

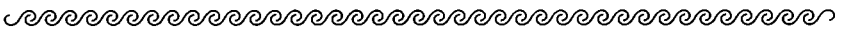
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥

दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १० ॥ चण्डिके! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ ११ ॥ मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो । परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १२ ॥ जो मुझसे द्वेष रखते हों, उनका नाश और मेरे बल की वृद्धि करो । रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १३ ॥ देवी! मेरा कल्याण करो । मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो । रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १४ ॥

अम्बिके! देवता और असुर - दोनों अपने माथे के मुकुट की मणियों को तुम्हारे चरणों पर धिसते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १५ ॥





विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।

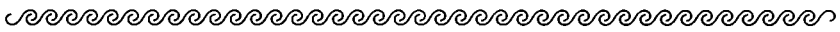
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥

तुम अपने भक्तजन को विद्वान् यशस्वी और लक्ष्मीवान् बनाओ तथा रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥१६॥ प्रचण्ड दैत्यों के दर्प का दलन करनेवाली चण्डिके! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥१७॥ चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा प्रशंसित चार भुजा धारिणी परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥१८॥ देवी अम्बिके! भगवान् विष्णु नित्य-निरन्तर भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥१९॥ हिमालय-कन्या पार्वती के पति महादेवजी के द्वारा प्रशंसित होनेवाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥२०॥ शचीपति इन्द्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होनेवाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥२१॥





देवि प्रचण्डदोर्दण्ड दैत्यदर्पविनाशिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।

तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥

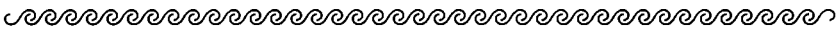
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।

स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ॐ॥ ॥ २५ ॥

॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

प्रचण्ड भुजदण्डोंवाले दैत्यों का घमंड चूर करनेवाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥२२॥ देवी अम्बिके! तुम अपने भक्तजनों को सदा असीम आनन्द प्रदान करती रहती हो। मुझे तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥२३॥ मन की इच्छा के अनुसार चलनेवाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसारसागर से तारनेवाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो ॥२४॥ जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशतीरूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जपसंख्या से मिलनेवाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त होता है। साथ ही वह प्रचुर सम्पत्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥२५॥





॥ अथ कीलक स्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।

श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥ १ ॥

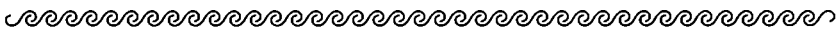
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥

ॐ चण्डिकादेवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेय जी कहते हैं – विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीनों वेद ही जिन के तीन दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण – प्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है ॥१॥ मन्त्रों का जो अभिकीलक है अर्थात् मन्त्रों की सिद्धि में विघ्न उपस्थित करनेवाले शापरूपी कीलक का जो निवारण करनेवाला है, उस सप्तशती स्तोत्र को सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिये (और जानकर उसकी उपासना करनी चाहिये) यद्यपि सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मन्त्रों के जप में भी जो निरन्तर लगा रहता है वह भी कल्याण का भागी होता है ॥२॥ उसके भी उच्चाटन आदि कर्म सिद्ध होते हैं तथा उसे भी समस्त दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है; तथापि जो अन्य मन्त्रों का जप न करके केवल इस सप्तशती नामक स्तोत्र से ही देवी की स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुतिमात्र से ही सच्चिदानन्दस्वरूपिणी देवी





सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।

एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति

॥ ३ ॥

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ।

विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम्

॥ ४ ॥

समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।

कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्

॥ ५ ॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।

समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्

॥ ६ ॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः ।

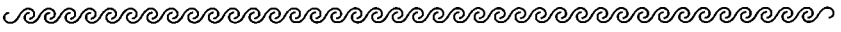
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः

॥ ७ ॥

सिद्ध हो जाती हैं ॥३॥ उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिये मन्त्र, औषधि तथा अन्य किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उनके उच्चाटन आदि समस्त अभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं ॥४॥ इतना ही नहीं, उनकी सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुएँ भी सिद्ध होती हैं। लोगों के मन में यह शङ्का थी कि 'जब केवल सप्तशती की उपासना से अथवा सप्तशती को छोड़कर अन्य मन्त्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध होते हैं, तब इनमें श्रेष्ठ कौन-सा साधन है?' लोगों की इस शङ्का को सामने रखकर भगवान् शंकर ने अपने पास आये हुए जिज्ञासुओं को समझाया कि यह सप्तशती नामक सम्पूर्ण स्तोत्र ही सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणमय है ॥५॥

तदनुसार भगवती चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को महादेवजी ने गुप्त कर दिया। सप्तशती के पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसकी कभी समाप्ति नहीं होती; किन्तु अन्य मन्त्रों की जपजन्य





ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।

इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।

स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९ ॥

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ।

नाऽपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।

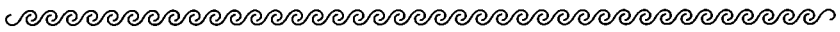
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।

तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥

पुण्य की समाप्ति हो जाती है । अतः भगवान् शिव ने अन्य मन्त्रों की अपेक्षा जिस सप्तशती की ही श्रेष्ठता का निर्णय किया, उसे यथार्थ ही जानना चाहिये ॥६॥ अन्य मन्त्रों का जप करनेवाला पुरुष भी यदि सप्तशती के स्तोत्र और जप का अनुष्ठान कर ले तो वह भी पूर्णरूप से ही कल्याण का भागी होता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है । जो साधक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है और फिर उसे प्रसादरूप से ग्रहण करता है, उसी पर भगवती प्रसन्न होती हैं; अन्यथा उनकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती । इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबन्धक रूप कीलक द्वारा महादेवजी ने इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है ॥७-८॥ जो पूर्वोक्त रीति से निष्कीलन करके इस सप्तशती-स्तोत्र का प्रतिदिन स्पष्ट उच्चारणपूर्वक पाठ करता है, वह मनुष्य सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद होता है और वही गन्धर्व भी होता है ॥९॥ सर्वत्र विचरते रहने पर भी इस संसार में उसे कहीं भी





शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ।

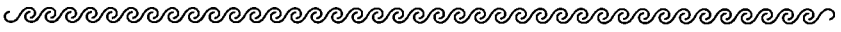
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ।

शत्रुहानिः परमोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥३ॐ॥ ॥१४॥

॥ इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

भय नहीं होता । वह अपमृत्यु के वश में नहीं पड़ता तथा देह त्यागने के अनन्तर मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥१०॥ अतः कीलन को जानकर उसका परिहार करके ही सप्तशती का पाठ आरम्भ करे । जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है । इसलिये कीलक और निष्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है और विद्वान् पुरुष इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरम्भ करते हैं ॥११॥ स्त्रियों में जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है, वह सब देवी के प्रसाद का ही फल है । अतः इस कल्याणमय स्तोत्र का सदा जप करना चाहिये ॥१२॥ इस स्तोत्र का मन्दस्वर से पाठ करने पर स्वल्प फल की प्राप्ति होती है और उच्च स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल की सिद्धि होती है । अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ आरम्भ करना चाहिये ॥१३॥ जिनके प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा परम मोक्ष की भी सिद्धि होती है, उस कल्याणमयी जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते? ॥१४॥



॥ अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः

॥१॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता

॥ २ ॥

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा

॥ ३ ॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यतेजगत् ।

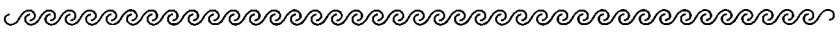
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्तेच सर्वदा

॥ ४ ॥

अनुवाद : जो इस विश्व की अधीश्वरी जगत को धारण करनेवाली, संसार का पालन और संहार करनेवाली तथा तेजः स्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति है, उन्हीं भगवती निद्रादेवी की भगवान् ब्रह्मा स्तुति करने लगे ॥१॥

ब्रह्माजी ने कहा - देवी! तुम्हीं स्वाहा, तुम्हीं स्वधा और तुम्हीं वषट्कार हो। स्वर भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। तुम्हीं जीवनदायिनी सुधा हो। नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकार- इन तीन मात्राओं के रूप में तुम्हीं स्थित हो ॥२॥ इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त जो बिन्दुस्वरूप नित्य अर्धमात्र है, जिसका विशेष रूप से उच्चारण नहीं किया जा सकता, वह भी तुम्हीं हो। देवी! तुम्हीं संध्या, सावित्री तथा परम जननी हो ॥३॥ देवी! तुम्हीं इस विश्व-ब्रह्माण्ड को धारण करती हो। तुमसे ही इस जगत् की सृष्टि होती है। तुम्हीं से इसका

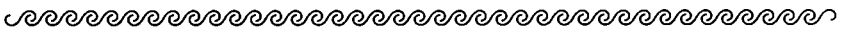




विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।	
तथा संहतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये	॥ ५ ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।	
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी	॥ ६ ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।	
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा	॥ ७ ॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।	
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च	॥ ८ ॥
खड्गिणी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।	
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा	॥ ९ ॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।	
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी	॥ १० ॥

पालन होता है और सदा तुम्हीं कल्प के अन्त में सब को अपना ग्रास बना लेती हो ॥४॥ जगन्मयी देवी! इस जगत् की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालन-काल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्त के समय संहाररूप धारण करनेवाली हो ॥५॥ तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहरूपा, महादेवी और महासुरी हो ॥६॥ तुम्हीं तीनों गुणों को उत्पन्न करनेवाली सबकी प्रकृति हो। भयंकर कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो ॥७॥ तुम्हीं श्री, तुम्हीं ईश्वरी, तुम्हीं हीं और तुम्हीं बोधस्वरूपा बुद्धि हो। लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम्हीं हो ॥८॥ तुम खड्गधारिणी, शूलधारिणी, घोररूपा तथा गदा, चक्र, शङ्ख और धनुष धारण करनेवाली हो। बाण, भुशुण्डी और परिघ - ये भी तुम्हारे अस्त्र हैं ॥९॥ तुम सौम्य और सौम्यतरा हो-इतना ही





यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ११ ॥

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत् ।

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ १३ ॥

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।

मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतोलघु ।

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १५ ॥

॥ इति रात्रिसूक्तम् ॥

नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन सब की अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो । परा और अपरा—सबसे परे रहनेवाली परमेश्वरी तुम्हीं हो ॥१०॥ सर्वस्वरूपे देवी! कहीं भी सत्-असत् रूप जो कुछ वस्तुएँ हैं और उन सब की जो शक्ति है, वह तुम्हीं हो । ऐसी अवस्था में तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? ॥११॥ जो इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन भगवान् को भी जब तुमने निद्रा के अधीन कर दिया है, तुम्हारी स्तुति करने में यहाँ कौन समर्थ हो सकता है? ॥१२॥ मुझको, भगवान् शङ्कर को तथा भगवान् विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण कराया है; अतः तुम्हारी स्तुति करने की शक्ति किस में है? ॥१३॥ देवी! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसित हो । ये जो दोनों दुर्धर्ष असुर मधु और कैटभ हैं, इनको मोह में डाल दो और जगदीश्वर भगवान् विष्णु को शीघ्र ही जगा दो । साथ ही उनके भीतर इन दोनों महान् असुरों को मार डालने की बुद्धि उत्पन्न कर दो ॥१४-१५॥



॥ अथ महिषान्तकरी-सूक्तम् ॥

‘ॐ’ ऋषिरुवाच

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये

तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।

तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा

वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः

॥ १ ॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या

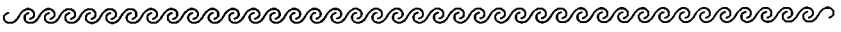
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।

तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां

भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः

॥ २ ॥

ऋषि कहते हैं – अत्यन्त पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर तथा उनकी दैत्य-सेना के देवी के हाथ से मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता प्रणाम के लिये गर्दन तथा कंधे झुकाकर उन भगवती दुर्गा का उत्तम वचनों द्वारा स्तवन करने लगे । उस समय उनके सुन्दर अङ्गों में अत्यन्त हर्ष के कारण रोमाञ्च हो आया था ॥१॥ देवता बोले- ‘सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिन का स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीय उन जगदम्बा को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं । वे हम लोगों का कल्याण करें ॥२॥ जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान् शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत् का पालन एवं अशुभ भय का नाश करने का विचार करें ॥३॥ जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप



यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु

॥ ३ ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्

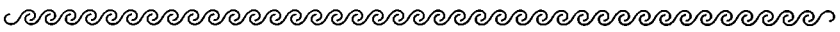
॥ ४ ॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु

॥ ५ ॥

से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। देवी! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये ॥४॥ देवी! आप के इस अचिन्त्य रूप का, असुरों का नाश करनेवाले भारी पराक्रम का तथा समस्त देवताओं और दैत्यों के समक्ष युद्ध में प्रकट किये हुए आप के अद्भुत चरित्रों का हम किस प्रकार वर्णन करें ॥५॥ आप सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति में कारण हैं। आप में सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण—ये तीनों गुण मौजूद हैं; तो भी दोषों के साथ आप का संसर्ग नहीं जान पड़ता। भगवान् विष्णु और महादेवजी आदि देवता भी आप का पार नहीं पाते। आप ही सब का आश्रय हैं। यह समस्त जगत् आप का अंशभूत है; क्योंकि आप सब की नादिभूत अव्याकृता परा प्रकृति





हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै -

र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।

सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत -

मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या

॥ ६ ॥

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन

तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।

स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु -

रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च

॥ ७ ॥

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व -

मभ्यस्यसेसुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।

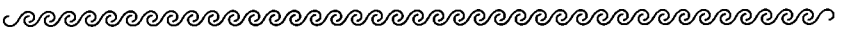
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै -

र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि

॥ ८ ॥

हैं ॥६॥ देवी! संपूर्ण यज्ञों में जिस के उच्चारण से सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं, वह स्वाहा आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्ति का कारण हैं, अत एव सब लोग आप को स्वधा भी कहते हैं ॥७॥ देवी! जो मोक्ष की प्राप्ति का साधन है, अजिन्त्य महाव्रतस्वरूपा है, समस्त दोषों से रहित, जितेन्द्रिय, तत्त्व को ही सार वस्तु माननेवाले अचिन्त्य तथा मोक्ष की अभिलाषा रखनेवाले मुनिजन जिस का अभ्यास करते हैं, वह भगवती परा विद्या आप ही हैं ॥८॥ आप शब्दस्वरूप हैं, अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा उद्गीथ के मनोहर पदों के पाठ से युक्त सामवेद का भी आधार आप ही हैं। आप देवी, त्रयी (तीनों वेद) और भगवती (छहों ऐश्वर्यों से युक्त) हैं। इस विश्व की उत्पत्ति एवं पालन के लिये आप ही वार्ता (खेती एवं आजीविका) के





शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान -

मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।

देवी त्रयी भगवती भवभावनाय

वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री

॥ ९ ॥

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा

दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।

श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा

गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा

॥ १० ॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-

बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।

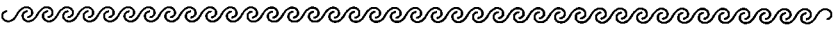
अत्यभ्दुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण

॥ ११ ॥

रूप में प्रकट हुई हैं। आप सम्पूर्ण जगत् की घोर पीड़ा का नाश करनेवाली हैं ॥९॥ देवी! जिस से समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं। दुर्गम भवसागर से पार उतारनेवाली नौकारूप दुर्गा देवी भी आप ही हैं। आप की कहीं भी आसक्ति नहीं है। कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में एकमात्र निवास करने वाली भगवती लक्ष्मी तथा भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं ॥१०॥ आप का मुख मन्द मुस्कान से सुशोभित, निर्मल, पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करलेवाला और उत्तम सुवर्ण की मनोहर कान्ति से कमनीय है, तो भी उसे देखकर महिषासुर को क्रोध हुआ और सहसा उसने उस पर प्रहार कर दिया, यह बड़े आश्चर्य की बात है ॥११॥ देवी! वही मुख जब क्रोध से युक्त होने पर उदयकाल के चन्द्रमा की भाँति लाल और तनी हुई भौंहों के कारण विकराल हो उठा, तब उसे





दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भृकुटीकराल -

मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।

प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं

कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन

॥ १२ ॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय

सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत -

नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य

॥ १३ ॥

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां

तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।

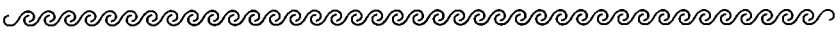
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा

येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना

॥ १४ ॥

देख कर जो महिषासुर के प्राण तुरंत नहीं निकल गये, यह उससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात है; क्योंकि क्रोध में भरे हुए यमराज को देखकर भला कौन जीवित रह सकता है? ॥१२॥ देवी! आप प्रसन्न हों । परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का सर्वनाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है; क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है ॥१३॥ सदा अभ्युदय प्रदान करनेवाली आप जिन पर प्रसन्न रहती हैं, वे ही देश में सम्मानित हैं, उन्हीं को धन और यश की प्राप्ति होती है, उन्हीं का धर्म कभी शिथिल नहीं होता तथा वे ही अपने हृष्ट-पुष्ट स्त्री, पुत्र और भृत्यों के साथ धन्य माने जाते हैं ॥१४॥ देवी! आप की ही कृपा से पुण्यात्मा पुरुष प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सदा सब प्रकार के धर्मानुकूल कर्म करता है और





धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा -
प्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा -
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन

॥ १५ ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता

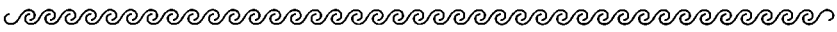
॥ १६ ॥

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि

॥ १७ ॥

उसके प्रभाव से स्वर्गलोक में जाता है; इस लिये आप तीनों लोकों में निश्चय ही मनोवाञ्छित फल देनेवाली हैं ॥१५ ॥ माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं । दुःख, दरिद्रता और भय हरनेवाली देवी! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो ॥१६ ॥ देवी! इन राक्षसों के मारने से संसार को सुख मिले तथा ये राक्षस चिरकाल तक नरक में रहने के लिये भले ही पाप करते रहे हों, इस समय संग्राम में मृत्यु को प्राप्त होकर स्वर्गलोक में जायँ-निश्चय ही यही सोचकर आप शत्रुओं का वध करती हैं ॥१७ ॥ आप शत्रुओं पर शस्त्रों का प्रहार क्यों करती हैं? समस्त असुरों को दृष्टिपात मात्र से ही भस्म क्यों नहीं कर देतीं ? इसमें एक रहस्य है । ये शत्रु भी हमारे शस्त्रों से पवित्र होकर उत्तम





दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी

॥१८॥

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड -
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्

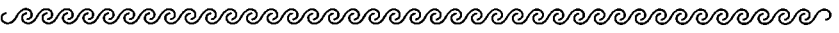
॥१९॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तु हतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्

॥२०॥

लोकों में जाँय-इस प्रकार उनके प्रति भी आपका विचार अत्यन्त उत्तम रहता है ॥१८॥ खड्ग के तेजःपुञ्ज की भयङ्कर दीप्ति से तथा आप के त्रिशूल के अग्रभाग की घनीभूत प्रभा से चौंधिया कर जो असुरों की आँखें फूट नहीं गयीं, उसमें कारण यही था कि वे मनोहर रश्मियों से युक्त चन्द्रमा के समान आनन्द प्रदान करनेवाले आप के इस सुन्दर मुख का दर्शन करते थे ॥१९॥ देवी! आप का शील दुराचारियों के बुरे बर्ताव को दूर करनेवाला है। साथ ही यह रूप ऐसा है, जो कभी चिन्तन में भी नहीं आ सकता और जिस की कभी दूसरों से तुलना भी नहीं हो सकती; तथा आप का बल और पराक्रम तो उन दैत्यों का भी नाश करनेवाला है, जो कभी देवताओं के पराक्रम को भी नष्ट कर चुके थे। इस प्रकार आपने शत्रुओं पर भी अपनी दया ही प्रकट की है ॥२०॥ वरदायिनी देवी! आपके इस पराक्रम की किसके साथ तुलना हो सकती है तथा





केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य

रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।

चित्तेकृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा

त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि

॥२१॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन

त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।

नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-

मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते

॥२२॥

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।

घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च

॥२३॥

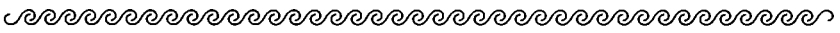
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।

भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि

॥२४॥

शत्रुओं को भय देनेवाला एवं अत्यन्त मनोहर ऐसा रूप भी आप के सिवा और कहाँ है? हृदय में कृपा और युद्ध में निष्ठुरता—ये दोनों बातें तीनों लोकों के भीतर केवल आप में ही देखी गयी हैं ॥२१॥ मातः! आपने शत्रुओं का नाश करके इस समस्त त्रिलोक की रक्षा की है। उन शत्रुओं को भी युद्धभूमि में मारकर स्वर्गलोक में पहुँचाया है तथा उन्मत्त दैत्यों से प्राप्त होनेवाले हम लोगों के भय को भी दूर कर दिया है, आप को हमारा नमस्कार है ॥२२॥ देवी! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हम लोगों की रक्षा करें ॥२३॥ चण्डिके! पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में आप हमारी रक्षा करें तथा ईश्वरि! अपने त्रिशूल को घुमाकर उत्तर दिशा में भी हमारी रक्षा करें ॥२४॥





सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।

यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२५॥

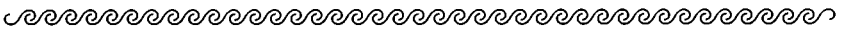
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।

करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२६॥

(श्री दुर्गासप्तशती चतुर्थोऽध्यायतः)

तीनों लोकों में आप के जो परम सुन्दर एवं अत्यन्त भयङ्कर रूप विचरते रहते हैं, उनके द्वारा भी आप हमारी तथा इस भूलोक की रक्षा करें ॥२५॥ अम्बिके! आपके कर-पल्लवों में शोभा पानेवाले खड्ग, शूल और गदा आदि जो-जो अस्त्र हों, उन सब के द्वारा आप सब ओर से हम लोगों की रक्षा करें ॥२६॥





॥ अथ अपराजितास्तोत्रम् ॥

देवा ऊचुः

नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।

ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।

नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ३ ॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।

ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।

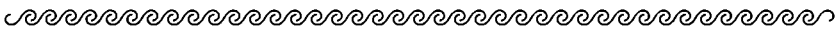
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

देवता बोले – देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार है । प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है । हमलोग नियमपूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं ॥१॥ रौद्री, नित्यस्वरूपिणी, गौरी, धात्री देवी को हम नमस्कार करते हैं । ज्योत्स्नामयी चन्द्ररूपिणी एवं सुखस्वरूपा देवी को सतत प्रणाम है ॥२॥ शरणागतों का कल्याण करने वाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं । नैर्ऋती (राक्षसों की लक्ष्मी), राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिवपत्नी) स्वरूपा आप जगदम्बा को बार-बार नमस्कार है ॥३॥ दुर्गा, दुर्गपारा (दुर्गम संकट से पार उतारने वाली), सारा (सब की सारभूता), सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रा देवी को सर्वदा नमस्कार है ॥४॥ अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा देवी को हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारंबार प्रणाम है। जगत् की आधारभूता

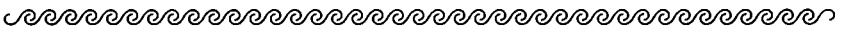




या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ ७ ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ ८ ॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ ९ ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ १० ॥
या देवी सर्वभूतेषु छाया रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ ११ ॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ १२ ॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥ १३ ॥

कृति देवी को बारंबार नमस्कार है ॥५॥ जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से कही जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥६॥ जो देवी सब प्राणियों में चेतना रूप से जानी जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥७॥ जो देवी सब प्राणियों में बुद्धि रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥८॥ जो देवी सब प्राणियों में निद्रा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥९॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षुधा (भूख) रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१०॥ जो देवी सब प्राणियों में छाया रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥११॥ जो देवी सब प्राणियों में शक्तिरूप से स्थित हैं, उनको

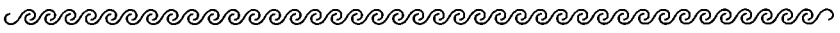




या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२०॥

नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१२॥ जो देवी सब प्राणियों में तृष्णारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१३॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षान्ति (क्षमा) रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१४॥ जो देवी सब प्राणियों में जाति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१५॥ जो देवी सब प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१६॥ जो देवी सब प्राणियों में शान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१७॥ जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१८॥ जो देवी सब प्राणियों में कान्तिरूप से स्थित हैं,

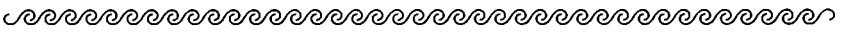




या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः	॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः	॥२७॥

उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥१९॥ जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मीरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२०॥ जो देवी सब प्राणियों में वृत्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२१॥ जो देवी सब प्राणियों में स्मृतिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२२॥ जो देवी सब प्राणियों में दयारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२३॥ जो देवी सब प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२४॥ जो देवी सब प्राणियों में मातारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२५॥ जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको





चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

॥२८॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया -

तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः

॥२९॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-

रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः

सर्वापदोभक्तिविनम्रमूर्तिभिः

॥३०॥

(श्री दुर्गासप्तशती पञ्चमोऽध्यायतः)

नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२६॥ जो जीवों के इन्द्रिय वर्ग की अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियों में सदा व्याप्त रहनेवाली है, उन व्याप्ति देवी को बारंबार नमस्कार है ॥२७॥ जो देवी चैतन्यरूप से इस संपूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥२८॥ पूर्वकाल में अपनी अभीष्टता प्राप्ति होने से देवताओं ने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिनकी सेवा की, वही कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले ॥२९॥ उद्दण्ड दैत्यों से सताये हुए हम सभी देवता जिन परमेश्वरी को इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्ति से विनम्र पुरुषों द्वारा स्मरण किए जाने पर तत्काल ही संपूर्ण विपत्तियों का नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें ॥३०॥



॥ अथ नारायणीसूक्तम् ॥

‘ॐ’ ऋषिरुवाच

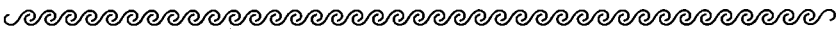
देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः

॥ १ ॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य

॥ २ ॥

ऋषि कहते हैं – देवी के द्वारा वहाँ महादैत्यपति शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता अग्नि को आगे करके इन कात्यायनी देवी की स्तुति करने लगे । उस समय अभीष्ट की प्राप्ति होने से उनके मुखकमल दमक उठे थे और उनके प्रकाश से दिशाएँ भी जगमगा उठी थीं ॥१॥ (देवता बोले) – शरणागत की पीड़ा दूर करनेवाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ । सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ । विश्वेश्वरी! विश्व की रक्षा करो । देवी! तुम्हीं चराचर जगत् की अधीश्वरी हो ॥२॥ तुम इस जगत् का एकमात्र आधार हो; क्योंकि पृथ्वीरूप से तुम्हारी ही स्थिति है । देवी! तुम्हारा पराक्रम अलङ्घनीय है । तुम्हीं जलरूप में स्थित होकर सम्पूर्ण जगत् को तृप्त करती हो ॥३॥ तुम अनन्त बलसम्पन्न वैष्णवी शक्ति हो । इस विश्व की कारणभूता परा माया हो । देवी! तुमने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है । तुम्हीं प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो ॥४॥ देवी! सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं । जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे



आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत -
दाप्यायतेकृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये

॥ ३ ॥

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः

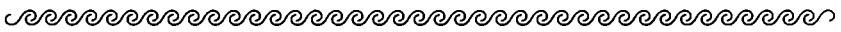
॥ ४ ॥

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः

॥५ ॥

सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं । जगदम्ब! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है । तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे एवं परा वाणी हो ॥५॥ जब तुम सर्वस्वरूपा देवी स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करनेवाली हो, तब इसी रूप में तुम्हारी स्तुति हो गयी । तुम्हारी स्तुति के लिये इससे अच्छी उक्तियाँ और क्या हो सकती हैं ? ॥६॥ बुद्धिरूप से सब लोगों के हृदय में विराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है ॥७॥ कला, काष्ठा आदि के रूप से क्रमशः परिणाम (अवस्था-परिवर्तन) की ओर ले जानेवाली तथा विश्व का उपसंहार करने में समर्थ नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥८॥ नारायणी! तुम सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गलमयी हो । कल्याणदायिनी शिव हो । सब पुरुषार्थों को सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो । तुम्हें नमस्कार है ॥९॥ तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता,

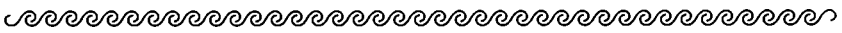




सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी । त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः	॥६॥
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदि देवि नारायणि नमोऽस्तु ते	॥७॥
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते	॥८॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते	॥९॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१०॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते	॥११॥

सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो । नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥१०॥ शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा दूर करनेवाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है ॥११॥ नारायणी! तुम ब्रह्माणी का रूप धारण करके हंसों से जुते हुए विमान पर बैठती तथा कश-मिश्रित जल छिड़कती रहती हो । तुम्हें नमस्कार है ॥१२॥ महेश्वरीरूप से त्रिशूल, चन्द्रमा एवं सर्प को धारण करनेवाली तथा महान् वृषभ की पीठ पर बैठनेवाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है ॥१३॥ मोरों और मुर्गों से घिरी रहनेवाली तथा महाशक्ति धारण करनेवाली कौमारीरूपधारिणी निष्पापे नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥१४॥ शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्गधनुषरूप उत्तम आयुधों को धारण करनेवाली वैष्णवी शक्तिरूपा नारायणी! तुम प्रसन्न होओ । तुम्हें नमस्कार है ॥१५॥ हाथ में भयानक महाचक्र लिये और दाढ़ों पर धरती को उठाये वाराहीरूपधारिणी कल्याणमयी नारायणी! तुम्हें

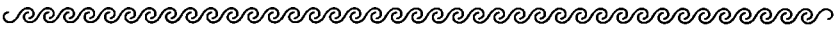




हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१२॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि । माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१३॥
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१४॥
शङ्खचक्रगदाशाङ्गगृहीतपरमायुधे । प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१५॥
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे । वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१६॥
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे । त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते	॥१७॥

नमस्कार है ॥१६॥ भयंकर नृसिंहरूप से दैत्यों के वध के लिये उद्योग करनेवाली तथा त्रिभुवन की रक्षा में संलग्न रहनेवाली नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥१७॥ मस्तक पर किरीट और हाथ में महावज्र धारण करनेवाली, सहस्र नेत्रों के कारण उदीप्त दिखायी देनेवाली और वृत्रासुर के प्राणों का अपहरण करनेवाली इन्द्रशक्तिरूपा नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥१८॥ शिवदूतीरूप से दैत्यों की महती सेना का संहार करनेवाली, भयंकर रूप धारण तथा विकट गर्जन करनेवाली नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥१९॥ दाढ़ों के कारण विकराल मुखवाली मुण्डमाला से विभूषित मुण्डमर्दिनी चामुण्डारूपा नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥२०॥ लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि तथा महा अविद्यारूपा नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥२१॥ मेधा, सरस्वती, वरा (श्रेष्ठा), भूति (ऐश्वर्यरूपा), बाभ्रवी (भूरे रंग की अथवा पार्वती), तामसी





किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥

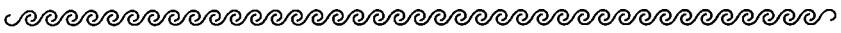
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१९॥

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२१॥

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥

(महाकाली), नियता (संयमपरायणा) तथा ईशा (सब की अधीश्वरी) रूपिणी नारायणी! तुम्हें नमस्कार है ॥२२॥ सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गेदेवी! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है ॥२३॥ कात्यायनी! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है ॥२४॥ भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये। तुम्हें नमस्कार है ॥२५॥ देवी! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हमलोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मों से रक्षा करती है ॥२६॥ चण्डिके! तुम्हारे हाथों में सुशोभित खड्ग, जो असुरों के रक्त और चर्बी से चर्चित है, हमारा मञ्जल करे। हम तुम्हें नमस्कार करते हैं ॥२७॥

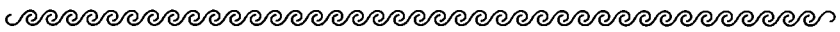


सर्वस्वरूपेसर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।	
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते	॥२३॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।	
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते	॥२४॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।	
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते	॥२५॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।	
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव	॥२६॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।	
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्	॥२७॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।	
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति	॥२८॥

देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाञ्छित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो । जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं । तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देनेवाले हो जाते हैं ॥२८॥ देवी! अम्बिके! तुमने अपने स्वरूप को अनेक भागों में विभक्त करके नाना प्रकार के रूपों से जो इस समय इन धर्मद्रोही महादैत्यों का संहार किया है, वह सब दूसरी कौन कर सकती थी? ॥२९॥ विद्याओं में, ज्ञान को प्रकाशित करनेवाले शास्त्रों में तथा आदिवाक्यों (वेदों) में तुम्हारे सिवा और किसका वर्णन है? तथा तुमको छोड़कर दूसरी कौन ऐसी शक्ति है, जो इस विश्व को अज्ञानमय घोर अंधकार से परिपूर्ण ममतारूपी गढ़े में निरन्तर भटका रही हो ॥३०॥

जहाँ राक्षस, जहाँ भयंकर विषवाले सर्प, जहाँ शत्रु, जहाँ लुटेरों की सेना और जहाँ दावानल हो,





एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥२९॥

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३०॥

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥३१॥

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३२॥

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्
॥३३॥

वहाँ तथा समुद्र के बीच में भी स्थित रहकर तुम विश्व की रक्षा करती हो ॥३१॥ विश्वेश्वरी! तुम विश्व का पालन करती हो। विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो। तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो। जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देनेवाले होते हैं ॥३२॥ देवी! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत् का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाले महामारी आदि बड़े-बड़े उपद्रवों को शीघ्र दूर करो ॥३३॥

विश्वकी पीड़ा दूर करनेवाली देवी! हम तुम्हारे चरणों पर पड़े हुए हैं, हम पर प्रसन्न होओ।





प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव

॥३४॥

देव्युवाच

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्

॥३५॥

देवा ऊचुः

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्

॥३६॥

(श्री दुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायतः)

त्रिलोकनिवासियों की पूजनीया परमेश्वरी! सब लोगों को वरदान दो ॥३४॥

देवी बोलीं – देवताओं! मैं वर देने को तैयार हूँ। तुम्हारे मन में जिसकी इच्छा हो, वह वर माँग लो। संसार के लिये उस उपकारक वर को मैं अवश्य दूँगी ॥३५॥

देवता बोले – सर्वेश्वरी! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ॥३६॥



देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो

न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।

न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं

परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्

॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया

विधेयाशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।

तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे

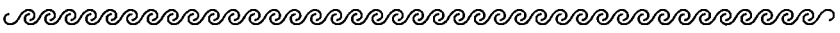
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति

॥२॥

हे माँ! मैं न मन्त्र जानता हूँ, न यन्त्र; अहो! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है । न आवाहन का पता है, न ध्यान का । स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है । न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है; परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण-तुम्हारे पीछे चलना । जो कि सब क्लेशों को-समस्त दुःख-विपत्तियों को हर लेने वाला है ॥१॥

सबका उद्धार करनेवाली कल्याणमयी माता! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझ से ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता; इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना; क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥२॥

माँ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत-से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही अत्यन्त चपल



पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः

परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति

॥३॥

जगन् मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता

न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति

॥४॥

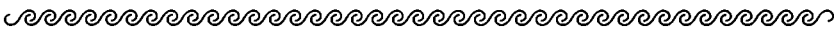
परित्यक्त्वा देवान् विविधविधसेवाकुलतया

मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।

तुम्हारा बालक हूँ, मेरे-जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है; क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥३॥

जगदम्ब! मातः! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवी! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया; तथापि मुझ-जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो, इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती ॥४॥ गणेशजी को जन्म देनेवाली माता पार्वती! (अन्य देवताओं की आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा-पूजा मुझसे नहीं हो पाती, अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित





इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता

निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्

॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा

निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं

जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ

॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं

भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्

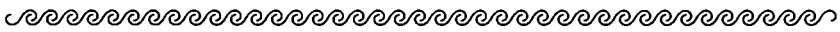
॥७॥

होकर किसकी शरण में जाऊंगा ॥५॥

माता अपर्णा! तुम्हारे मन्त्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाय तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करनेवाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मन्त्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होनेवाला उत्तम फल कैसा होगा? इसको कौन मनुष्य जान सकता है ॥६॥

भवानी! जो अपने अङ्गों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहनेवाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकी को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिन के हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति





न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः

॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव

॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गेकरुणार्णवेशिवे ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति

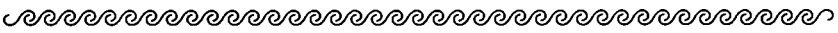
॥१०॥

भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है; तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्त्व बढ़ गया ॥७॥

मुख पर चन्द्रमा की शोभा धारण करनेवाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकाङ्क्षा; अतः तुम से मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी'—इन नामों का जप करते हुए बीते ॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करनेवाली मेरी वाणी ने कौन - सा अपराध नहीं किया है ।





जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥

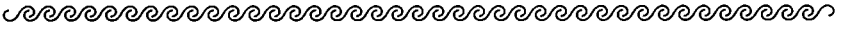
॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे-जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है ॥११॥

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ (पहले कभी नहीं करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं ॥१०॥

जगदम्बा! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है, पुत्र अपराध-पर-अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती ॥११॥ महादेवी! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है; ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वही करो ॥१२॥





ಶ್ರೀ ಚಿತ್ರಾಪುರ ಮಠ

ಶಿರಾಲಿ, ಉತ್ತರ ಕನ್ನಡ-581 354

|| ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ||

|| ಶ್ರೀಚಿತ್ರಾಪುರ ಮಠ ಶ್ರೀವಲ್ಲೀ ||

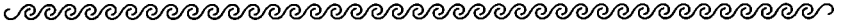
ಸಭಾ ಪ್ರಾರಂಭ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ

ದಕ್ಷಿಣಾಸ್ಯಸಮಾರಂಭಾ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯಮಧ್ಯಮಾ |
 ಅಸ್ಯದಾಚಾರ್ಯಪರ್ಯಂತಾ ಸ್ತರ್ಯಾ ಗುರುಪರಂಪರಾ ||
 ಶೃತಿಸ್ತೃತಿಪುರಾಣಾನಾಮಾಲಯಂ ಕರುಣಾಲಯಮ್ |
 ನಮಾಮಿ ಭಗವತ್ಪಾದಮ್ ಶಂಕರಂಲೋಕಶಂಕರಮ್ ||
 ಶಂಕರಂ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯಂ ಕೇಶವಂ ಚಾದರಾಯಣಮ್ |
 ಸೂತ್ರಭಾಷ್ಯಕೃತೌ ವಂದೇ ಭಗವಂತೌ ಪುನಃ ಪುನಃ ||
 ಈಶ್ವರೋ ಗುರುರಾತ್ಮೇತಿ ಮೂರ್ತಿಭೇದವಿಭಾಗಿನೆ |
 ವ್ಯೋಮವದ್ವ್ಯಾಪ್ತದೇಹಾಯ ದಕ್ಷಿಣಾಮೂರ್ತಯೇ ನಮಃ ||
 ಪರಿಚ್ಛಾನ್ನಾಶ್ರಮ ಶ್ರೀಗುರುಶಂಕರ ಪರಿಚ್ಛಾನ್ನಾಶ್ರಮ ಶಂಕರ ಸದ್ಗುರು |
 ಕೇಶವ ವಾಮನ ಕೃಷ್ಣ ಪಾಂಡುರಂಗ ಆನಂದ ಪರಿಚ್ಛಾನ್ನಗುರು |
 ಸದ್ಯೋಜಾತ ಶಂಕರ ಸದ್ಗುರು ||
 ಗುರುರ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ಗುರುವಿಷ್ಣುಃ ಗುರುರ್ದೇವೋ ಮಹೇಶ್ವರಃ |
 ಗುರುಃಸಾಕ್ಷಾತ್ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತಸ್ಮೈ ಶ್ರೀ ಗುರವೇ ನಮಃ ||
 ಓಂ ಸಹ ನಾವವತು | ಸಹ ನೌ ಭುನಕ್ತು | ಸಹ ವೀರ್ಯಂ ಕರವಾವಹ್ಯು |
 ತೇಜಸ್ವಿನಾವಧೀತಮಸ್ತುಮಾ ವಿದ್ವಿಷಾವಹ್ಯು ||
 || ಓಂ ಶಾಂತಿಃ ಶಾಂತಿಃ ಶಾಂತಿಃ ||

ಸಭಾ ಸಮಾಪ್ತಿ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ

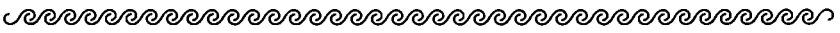
ನಂದಾಂತು ಸಾಧಕಾಃ ಸರ್ವೇ ವಿನಶ್ಯಂತು ವಿದೂಷಕಾಃ |
 ಅವಸ್ಥಾ ಶಾಂಭವೀ ಮೇಽಸ್ತು ಪ್ರಸನ್ನೋಽಸ್ತು ಗುರುಃ ಸದಾ ||
 ಸರ್ವೇ ಭವಂತು ಸುಖಿನಃ ಸರ್ವೇ ಸಂತು ನಿರಾಮಯಾಃ |
 ಸರ್ವೇ ಭದ್ರಾಣಿ ಪಶ್ಯಂತು ಮಾ ಕಶ್ಚಿದ್ ದುಃಖಮಾಪ್ನುಯಾತ್ ||
 ಓಂ ಪೂರ್ಣಮದಃ ಪೂರ್ಣಮಿದಂ ಪೂರ್ಣಾತ್ಪೂರ್ಣಮುದಚ್ಚಿತೇ |
 ಪೂರ್ಣಸ್ಯ ಪೂರ್ಣಮಾದಾಯ ಪೂರ್ಣಮೇವಾವಶಿಷ್ಯತೇ ||
 || ಓಂ ಶಾಂತಿಃ ಶಾಂತಿಃ ಶಾಂತಿಃ ||





ನವರಾತ್ರ, ನಿತ್ಯಪಾಠ





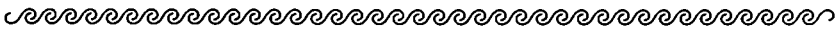
ಯೈಸ್ತು ಭಕ್ತ್ಯಾಸ್ತೃತಾ ನೂನಂ ತೇಷಾಂ ವೃದ್ಧಿಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ |
ಯೇ ತ್ವಾಂ ಸ್ಮರಂತಿ ದೇವೇಶಿ ರಕ್ಷಸೇ ತಾನ್ನ ಸಂಶಯಃ || ೮ ||
ಪ್ರೇತಸಂಸ್ಥಾತು ಚಾಮುಂಡಾ ವಾರಾಹೀ ಮಹಿಷಾಸನಾ |
ಐಂದ್ರೀ ಗಜಸಮಾರೂಢಾ ವೈಷ್ಣವೀ ಗರುಡಾಸನಾ || ೯ ||
ಮಾಹೇಶ್ವರೀ ವೃಷಾರೂಢಾ ಕೌಮಾರೀ ಶಿಖಿವಾಹನಾ |
ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ಪದ್ಮಾಸನಾ ದೇವೀ ಪದ್ಮ ಹಸ್ತಾ ಹರಿಪ್ರಿಯಾ || ೧೦ ||
ಶ್ವೇತರೂಪಧರಾ ದೇವೀ ಈಶ್ವರೀ ವೃಷವಾಹನಾ |
ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಹಂಸಸಮಾರೂಢಾ ಸರ್ವಾ ಭರಣಭೂಷಿತಾ || ೧೧ ||
ಇತ್ಯೇತಾ ಮಾತರಃ ಸರ್ವಾಃ ಸರ್ವಯೋಗಸಮನ್ವಿತಾಃ |
ನಾನಾಭರಣಶೋಭಾಢ್ಯಾ ನಾನಾರತ್ನೋಪಶೋಭಿತಾಃ || ೧೨ ||
ದೃಶ್ಯಂತೇ ರಥಮಾರೂಢಾ ದೇವ್ಯಃ ಕ್ರೋಧಸಮಾಕುಲಾಃ |
ಶಂಖಂ ಚಕ್ರಂ ಗದಾಂ ಶಕ್ತಿಂ ಹಲಂ ಚ ಮುಸಲಾಯುಧಮ್ || ೧೩ ||
ಖೇಟಕಂ ತೋಮರಂ ಚೈವ ಪರಶುಂ ಪಾಶಮೇವ ಚ |
ಕುಂತಾಯುಧಂ ತ್ರಿಶೂಲಂ ಚ ಶಾರ್ಙ್ಗಮಾಯುಧಮುತ್ತಮಮ್ || ೧೪ ||
ದೈತ್ಯಾನಾಂ ದೇಹನಾಶಾಯ ಭಕ್ತಾನಾಮಭಯಾಯ ಚ |
ಧಾರಯಂತ್ಯಾಯುಧಾನೀತ್ವಂ ದೇವಾನಾಂ ಚ ಹಿತಾಯ ವೈ || ೧೫ ||
ನಮಸ್ತೇಽಸ್ತು ಮಹಾರೌದ್ರೇ ಮಹಾಘೋರಪರಾಕ್ರಮೇ |
ಮಹಾಬಲೇ ಮಹೋತ್ಸಾಹೇ ಮಹಾಭಯವಿನಾಶಿನಿ || ೧೬ ||
ತ್ರಾಹಿ ಮಾಂ ದೇವಿ ದುಷ್ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯೇ ಶತ್ಕೂಣಾಂ ಭಯವರ್ಧಿನಿ |
ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ರಕ್ಷತು ಮಾಮೈಂದ್ರೀ ಆಗ್ನೇಯ್ಯಾಮಗ್ನಿದೇವತಾ || ೧೭ ||
ದಕ್ಷಿಣೇಽವತು ವಾರಾಹೀ ನೈಋತ್ಯಾಂ ವಿಡ್ಗಧಾರಿಣೀ |
ಪ್ರತೀಚ್ಯಾಂ ವಾರುಣೀ ರಕ್ಷೇದ್ವಾಯವ್ಯಾಂ ಮೃಗವಾಹಿನೀ || ೧೮ ||





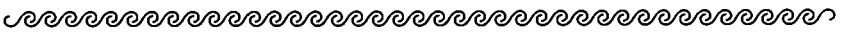
ಉದೀಚ್ಯಾಂ ಪಾತು ಕೌಮಾರೀ ಐಶಾನ್ಯಾಂ ಶೂಲಧಾರಿಣೀ	
ಊರ್ಧ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಮೇ ರಕ್ಷೇದಧಸ್ತಾದ್ವೈಷ್ಟವೀ ತಥಾ	೧೯
ಏವಂ ದಶ ದಿಶೋ ರಕ್ಷೇಚ್ಚಾಮುಂಡಾ ಶವವಾಹನಾ	
ಜಯಾ ಮೇ ಚಾಗ್ರತಃ ಪಾತು ವಿಜಯಾ ಪಾತು ಪೃಷ್ಠತಃ	೨೦
ಅಜಿತಾ ವಾಮಪಾರ್ಶ್ವೇ ತು ದಕ್ಷಿಣೇ ಚಾಪರಾಜಿತಾ	
ಶಿಖಾಮುದ್ಯೋತಿನೀ ರಕ್ಷೇದುಮಾ ಮೂರ್ಧ್ನಿ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಾ	೨೧
ಮಾಲಾಧರೀ ಲಲಾಟೇ ಚ ಭುವೌ ರಕ್ಷೇದ್ಯಶಸ್ವಿನೀ	
ತ್ರಿನೇತ್ರಾ ಚ ಭುವೋರ್ಮಧ್ಯೇ ಯಮಘಂಟಾ ಚ ನಾಸಿಕೇ	೨೨
ಶಂಖಿನೀ ಚಕ್ಷುಷೋರ್ಮಧ್ಯೇ ಶ್ರೋತ್ರಯೋರ್ಧ್ವಾರವಾಸಿನೀ	
ಕಪೋಲೌ ಕಾಲಿಕಾ ರಕ್ಷೇತ್ಕರ್ಣಮೂಲೇ ತು ಶಾಂಕರೀ	೨೩
ನಾಸಿಕಾಯಾಂ ಸುಗಂಧಾ ಚ ಉತ್ತರೋಷ್ಠೇ ಚ ಚರ್ಚಿಕಾ	
ಆಧರೇ ಚಾಮೃತಕಲಾ ಜಿಹ್ವಾಯಾಂ ಚ ಸರಸ್ವತೀ	೨೪
ದಂತಾನ್ ರಕ್ಷತು ಕೌಮಾರೀ ಕಂಠದೇಶೇ ತು ಚಂಡಿಕಾ	
ಘಂಟಿಕಾಂ ಚಿತ್ರಘಂಟಾ ಚ ಮಹಾಮಾಯಾ ಚ ತಾಲುಕೇ	೨೫
ಕಾಮಾಕ್ಷೀ ಚಿಬುಕಂ ರಕ್ಷೇದ್ವಾಚಂ ಮೇ ಸರ್ವಮಂಗಲಾ	
ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ಭದ್ರಕಾಲೀ ಚ ಪೃಷ್ಠವಂಶೇ ಧನುರ್ಧರೀ	೨೬
ನೀಲಗ್ರೀವಾ ಬಹಿಃ ಕಂಠೇ ನಲಿಕಾಂ ನಲಕೂಬರೀ	
ಸ್ಕಂಧಯೋಃ ಖಡ್ಗಿನೀ ರಕ್ಷೇದ್ ಬಾಹೂ ಮೇ ವಜ್ರಧಾರಿಣೀ	೨೭
ಹಸ್ತಯೋರ್ಧಂಡಿನೀ ರಕ್ಷೇದಂಬಿಕಾ ಚಾಂಗುಲೀಷು ಚ	
ನಖಾನ್ಮೂಲೇಶ್ವರೀ ರಕ್ಷೇತ್ ಕುಕ್ಷೌ ರಕ್ಷೇತ್ಕುಲೇಶ್ವರೀ	೨೮
ಸ್ತನೌ ರಕ್ಷೇನ್ಮಹಾದೇವೀ ಮನಃ ಶೋಕವಿನಾಶಿನೀ	
ಹೃದಯೇ ಲಲಿತಾ ದೇವೀ ಉದರೇ ಶೂಲಧಾರಿಣೀ	೨೯





ನಾಭೌ ಚ ಕಾಮಿನೀ ರಕ್ಷೇದ್ಗುಹ್ಯಂ ಗುಹ್ಯೇಶ್ವರೀ ತಥಾ |
 ಪೂತನಾ ಕಾಮಿಕಾ ಮೇಢ್ರಂ ಗುದೇ ಮಹಿಷವಾಹಿನೀ || ೩೦ ||
 ಕಟ್ಯಾಂ ಭಗವತೀ ರಕ್ಷೇಜ್ಜಾನುನೀ ವಿಂಧ್ಯವಾಸಿನೀ |
 ಜಂಘೇ ಮಹಾಬಲಾ ರಕ್ಷೇತ್ಸರ್ವಕಾಮಪ್ರದಾಯಿನೀ || ೩೧ ||
 ಗುಲ್ಫಯೋರ್ನಾರಸಿಂಹೀ ಚ ಪಾದಪ್ರಷ್ಯೇ ತು ತೈಜಸೀ |
 ಪಾದಾಂಗುಲೀಷು ಶ್ರೀ ರಕ್ಷೇತ್ಪಾದಾಧಸ್ತಲವಾಸಿನೀ || ೩೨ ||
 ನಖಾನ್ದಂಷ್ಟ್ರಕರಾಲೀ ಚ ಕೇಶಾಂಶ್ಚೈವೋರ್ಧ್ವಕೇಶಿನೀ |
 ರೋಮಕೂಪೇಷು ಕೌಬೇರೀ ತ್ವಚಂ ವಾಗೀಶ್ವರೀ ತಥಾ || ೩೩ ||
 ರಕ್ತಮಜ್ಜಾವಸಾಮಾಂಸಾನ್ಯಸ್ಥಿಮೇದಾಂಸಿ ಪಾರ್ವತೀ |
 ಅಂತ್ರಾಣಿ ಕಾಲರಾತ್ರಿಶ್ಚಪಿತ್ತಂ ಚ ಮುಕುಟೇಶ್ವರೀ || ೩೪ ||
 ಪದ್ಮಾವತೀ ಪದ್ಮಕೋಶೇ ಕಘೇ ಚೂಡಾಮಣಿಸ್ತಥಾ |
 ಜ್ವಾಲಾಮುಖೀ ನಖಜ್ವಾಲಾಮಭೇದ್ಯಾ ಸರ್ವಸಂಧಿಷು || ೩೫ ||
 ಶುಕ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಮೇ ರಕ್ಷೇಚ್ಚಾಯಾಂ ಭತ್ತ್ರೇಶ್ವರೀ ತಥಾ |
 ಅಹಂಕಾರಂ ಮನೋ ಬುದ್ಧಿಂ ರಕ್ಷೇನ್ತೇ ಧರ್ಮಧಾರಿಣೀ || ೩೬ ||
 ಪ್ರಾಣಾಪಾನೌ ತಥಾ ವ್ಯಾನಂ ಉದಾನಂ ಚ ಸಮಾನಕಮ್ |
 ವಜ್ರಹಸ್ತಾ ಚ ಮೇ ರಕ್ಷೇತ್ ಪ್ರಾಣಂ ಕಲ್ಯಾಣಶೋಭನಾ || ೩೭ ||
 ರಸೇ ರೂಪೇ ಚ ಗಂಧೇ ಚ ಶಬ್ದೇ ಸ್ಪರ್ಶೇ ಚ ಯೋಗಿನೀ |
 ಸತ್ತ್ವಂ ರಜಸ್ತಮಶ್ಚೈವ ರಕ್ಷೇನ್ನಾರಾಯಣೇ ಸದಾ || ೩೮ ||
 ಆಯೂ ರಕ್ಷತು ವಾರಾಹೀ ಧರ್ಮಂ ರಕ್ಷತು ವೈಷ್ಣವೀ |
 ಯಶಃ ಕೀರ್ತಿಂ ಚ ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ಚ ಧನಂ ವಿದ್ಯಾಂ ಚ ಚಕ್ರೀಣೀ || ೩೯ ||
 ಗೋತ್ರಮಿಂದ್ರಾಣಿ ಮೇ ರಕ್ಷೇತ್ಪಶೂನ್ಮೇ ರಕ್ಷ ಚಂಡಿಕೇ |
 ಪುತ್ರಾನ್ ರಕ್ಷೇನ್ನಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀಭಾರ್ಯಾಯಾಂ ರಕ್ಷತು ಭೈರವೀ || ೪೦ ||





ಪಂಥಾನಂ ಸುಪಥಾ ರಕ್ಷೇನ್ಮಾರ್ಗಂ ಕ್ಷೇಮಕರೀ ತಥಾ |
 ರಾಜದ್ವಾರೇ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀರ್ವಿಜಯಾ ಸರ್ವತಃ ಸ್ಥಿತಾ || ೪೧ ||
 ರಕ್ಷಾಹೀನಂ ತು ಯತ್ಸ್ಥಾನಂ ವರ್ಜಿತಂ ಕವಚೇನ ತು |
 ತತ್ಸರ್ವಂ ರಕ್ಷ ಮೇ ದೇವಿ ಜಯಂತೀ ಪಾಪನಾಶಿನೀ || ೪೨ ||
 ಪದಮೇಕಂ ನ ಗಚ್ಛೇತ್ತು ಯದೀಚ್ಛೇಚ್ಛುಭಮಾತ್ಮನಃ |
 ಕವಚೇನಾವೃತೋ ನಿತ್ಯಂ ಯತ್ರ ಯತ್ಸೇವ ಗಚ್ಛತಿ || ೪೩ ||
 ತತ್ರ ತತ್ರಾರ್ಥಲಾಭಶ್ಚ ವಿಜಯಃ ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕಃ |
 ಯಂ ಯಂ ಚಿಂತಯತೇ ಕಾಮಂ ತಂ ತಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ನಿಶ್ಚಿತಮ್ |
 ಪರಮೈಶ್ವರ್ಯಮತುಲಂ ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯತೇ ಭೂತಲೇ ಪುಮಾನ್ || ೪೪ ||
 ನಿರ್ಭಯೋ ಜಾಯತೇ ಮರ್ತ್ಯಃ ಸಂಗ್ರಾಮೇಷ್ವಪರಾಜಿತಃ |
 ತ್ರೈಲೋಕ್ಯೇ ತು ಭವೇತ್ಪೂಜ್ಯಃ ಕವಚೇನಾವೃತಃ ಪುಮಾನ್ || ೪೫ ||
 ಇದಂ ತು ದೇವ್ಯಾಃ ಕವಚಂ ದೇವಾನಾಮಪಿ ದುರ್ಲಭಮ್ |
 ಯಃ ಪಠೇತ್ಪಯತೋ ನಿತ್ಯಂ ತ್ರಿಸಂಧ್ಯಂ ಶ್ರದ್ಧಯಾನ್ವಿತಃ || ೪೬ ||
 ದೈವೀ ಕಲಾ ಭವೇತ್ಸಸ್ಯ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯೇಷ್ವಪರಾಜಿತಃ |
 ಜೀವೇದ್ವರ್ಷಶತಂ ಸಾಗ್ರಮಪಮೃತ್ಯುವಿವರ್ಜಿತಃ || ೪೭ ||
 ನಶ್ಯಂತಿ ವ್ಯಾಧಯಃ ಸರ್ವೇ ಲೂತಾವಿಸ್ಫೋಟಕಾದಯಃ |
 ಸ್ಥಾವರಂ ಜಂಗಮಂ ಚೈವ ಕೃತ್ರಿಮಂ ಚಾಪಿ ಯದ್ವಿಷಮ್ || ೪೮ ||
 ಅಭಿಚಾರಾಣಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಮಂತ್ರಯಂತ್ರಾಣಿ ಭೂತಲೇ |
 ಭೂಚರಾಃ ಖೇಚರಾಶ್ಚೈವ ಜಲಜಾಶ್ಚೋಪದೇಶಿಕಾಃ || ೪೯ ||
 ಸಹಜಾ ಕುಲಜಾ ಮಾಲಾ ಡಾಕಿನೀ ಶಾಕಿನೀ ತಥಾ |
 ಅಂತರಿಕ್ಷಚರಾ ಘೋರಾ ಡಾಕಿನ್ಯಶ್ಚ ಮಹಾಬಲಾಃ || ೫೦ ||
 ಗ್ರಹಭೂತಪಿಶಾಚಾಶ್ಚ ಯಕ್ಷಗಂಧರ್ವರಾಕ್ಷಸಾಃ |
 ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸವೇತಾಲಾಃ ಕೂಶ್ಮಾಂಡಾ ಭೈರವಾದಯಃ || ೫೧ ||





ವಿದ್ಯಾವಂತಂ ಯಶಸ್ವಂತಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀವಂತಂ ಜನಂ ಕುರು ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೧೬
ಪ್ರಚಂಡದೈತ್ಯದರ್ಪಘ್ನೇ ಚಂಡಿಕೇ ಪ್ರಣತಾಯ ಮೇ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೧೭
ಚತುರ್ಭುಜೇ ಚತುರ್ವಕ್ತ್ರಸಂಸ್ತತೇ ಪರಮೇಶ್ವರಿ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೧೮
ಕೃಷ್ಣೇನ ಸಂಸ್ತತೇ ದೇವಿ ಶಶ್ವಧ್ವಕ್ತ್ಯಾಸದಾಂಬಿಕೇ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೧೯
ಹಿಮಾಚಲಸುತಾನಾಥಸಂಸ್ತತೇ ಪರಮೇಶ್ವರಿ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೨೦
ಇಂದ್ರಾಣೀಪತಿಸದ್ಭಾವಪೂಜಿತೇ ಪರಮೇಶ್ವರಿ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೨೧
ದೇವಿ ಪ್ರಚಂಡರೋರ್ಧಂಡದೈತ್ಯದರ್ಪವಿನಾಶಿನಿ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೨೨
ದೇವಿ ಭಕ್ತಜನೋದ್ಧಾಮದತ್ತಾನಂದೋದಯೇ೦ಬಿಕೇ ರೂಪಂ ದೇಹಿ ಜಯಂ ದೇಹಿ ಯಶೋ ದೇಹಿ ದ್ವಿಷೋ ಜಹಿ	೨೩
ಪತ್ನೀಂ ಮನೋರಮಾಂ ದೇಹಿ ಮನೋವೃತ್ತಾನ್ಮಸಾರಿಣೀಮ್ ತಾರಿಣೀಂ ದುರ್ಗಸಂಸಾರಸಾಗರಸ್ಯ ಕುಲೋದ್ಭವಾಮ್	೨೪
ಇದಂ ಸ್ತೋತ್ರಂ ಪಠಿತ್ವಾ ತು ಮಹಾಸ್ತೋತ್ರಂ ಪಠೇನ್ನರಃ ಸ ತು ಸಪ್ತಶತೀಸಂಖ್ಯಾವರಮಾಪ್ನೋತಿ ಸಂಪದಾಮ್ ಓಂ	೨೫
 ಇತಿ ದೇವ್ಯಾ ಅರ್ಗಲಾಸ್ತೋತ್ರಂ ಸಂಪೂರ್ಣಮ್ 	





॥ ಅಥ ಕೀಲಕಸ್ತೋತ್ರಮ್ ॥

ಓಂ ಅಸ್ಯ ಶ್ರೀಕೀಲಕಮಂತ್ರಸ್ಯ ಶಿವಯುಷಿಃ, ಅನುಷ್ಠಪ್ ಭಂದಃ,
ಶ್ರೀಮಹಾಸರಸ್ವತೀದೇವತಾ, ಶ್ರೀಜಗದಂಬಾಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥಂ ಜಪೇ ವಿನಿಯೋಗಃ ।
ಓಂ ನಮಶ್ಚಂಡಿಕಾಯೈ ॥

ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಉವಾಚ

- ಓಂ ವಿಶುದ್ಧಜ್ಞಾನ ದೇಹಾಯ ತ್ರಿವೇದೀ ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಷೇ |
ಶ್ರೇಯಃಪ್ರಾಪ್ತಿನಿಮಿತ್ತಾಯ ನಮಃ ಸೋಮಾರ್ಧಧಾರಿಣೇ ॥ ೧ ॥
- ಸರ್ವಮೇತದ್ವಿಜಾನೀಯಾನ್ಮಮಂತ್ರಾಣಾಮಭಿಕೀಲಕಮ್ |
ಸೋಽಪಿ ಕ್ಷೇಮಮವಾಪ್ನೋತಿ ಸತತಂ ಜಾಪ್ಯತತ್ಪರಃ ॥ ೨ ॥
- ಸಿದ್ಧಂತ್ಯು ಚ್ಚಾಟನಾದೀನಿ ವಸ್ತೂನಿ ಸಕಲಾನ್ಯಪಿ |
ಏತೇನ ಸ್ತುವತಾಂ ದೇವೀ ಸ್ತೋತ್ರಮಾತ್ರೇಣ ಸಿದ್ಧ್ಯತಿ ॥ ೩ ॥
- ನ ಮಂತ್ರೋ ನೌಷಧಂ ತತ್ರ ನ ಕಿಂಚಿದಪಿ ವಿದ್ಯತೇ |
ವಿನಾ ಜಾಪ್ಯೇನ ಸಿದ್ಧ್ಯೇತ ಸರ್ವಮುಚ್ಚಾಟನಾದಿಕಮ್ ॥ ೪ ॥
- ಸಮಗ್ರಾಣ್ಯಪಿ ಸಿದ್ಧ್ಯಂತಿ ಲೋಕಶಂಕಾಮಿಮಾಂ ಹರಃ |
ಕೃತ್ವಾ ನಿಮಂತ್ರಯಾಮಾಸ ಸರ್ವಮೇವಮಿದಂ ಶುಭಮ್ ॥ ೫ ॥
- ಸ್ತೋತ್ರಂ ವೈ ಚಂಡಿಕಾಯಾಸ್ತು ತಚ್ಚ ಗುಪ್ತಂ ಚಕಾರ ಸಃ |
ಸಮಾಪ್ತರ್ನ್ ಚ ಪುಣ್ಯಸ್ಯ ತಾಂ ಯಥಾವನ್ನಿಯಂತ್ರಣಾಮ್ ॥ ೬ ॥
- ಸೋಽಪಿ ಕ್ಷೇಮಮವಾಪ್ನೋತಿ ಸರ್ವಮೇವಂ ನ ಸಂಶಯಃ |
ಕೃಷ್ಣಾಯಾಂ ವಾ ಚತುರ್ಧಶ್ಯಾಮಷ್ಟಮ್ಯಾಂ ವಾ ಸಮಾಹಿತಃ ॥ ೭ ॥





ಅರ್ಧಮಾತ್ರಾಸ್ಥಿತಾ ನಿತ್ಯಾ ಯಾನುಚ್ಚಾರ್ಯಾ ವಿಶೇಷತಃ |

ತ್ವಮೇವ ಸಂಧ್ಯಾ ಸಾವಿತ್ರೀ ತ್ವಂ ದೇವಿ ಜನನೀ ಪರಾ || ೩ ||

ತ್ವಯೈತದ್ಧಾರ್ಯತೇ ವಿಶ್ವಂ ತ್ವಯೈತತ್ಸ ಜ್ಯತೇ ಜಗತ್ |

ತ್ವಯೈತತ್ಪಾಲ್ಯತೇ ದೇವಿ ತ್ವಮತ್ಸ್ಯಂತೇ ಚ ಸರ್ವದಾ || ೪ ||

ವಿಸೃಷ್ಟ್ವಾ ಸೃಷ್ಟಿರೂಪಾ ತ್ವಂ ಸ್ಥಿತಿರೂಪಾ ಚ ಪಾಲನೇ |

ತಥಾ ಸಂಹೃತಿರೂಪಾಂತೇ ಜಗತೋಽಸ್ಯ ಜಗನ್ಮಯೇ || ೫ ||

ಮಹಾವಿದ್ಯಾ ಮಹಾಮಾಯಾ ಮಹಾಮೇಧಾ ಮಹಾಸ್ವೃತಿಃ |

ಮಹಾಮೋಹಾ ಚ ಭವತೀ ಮಹಾದೇವೀ ಮಹಾಸುರೀ || ೬ ||

ಪ್ರಕೃತಿಸ್ತ್ವಂ ಚ ಸರ್ವಸ್ಯ ಗುಣತ್ರಯವಿಭಾವಿನೀ |

ಕಾಲರಾತ್ರಿಮರ್ಹಾರಾತ್ರಿಮೋಹರಾತ್ರಿಶ್ಚ ತ್ರಿಶ್ಚದಾರುಣಾ || ೭ ||

ತ್ವಂ ಶ್ರೀಸ್ವಾಮೀಶ್ವರೀ ತ್ವಂ ಹ್ರೀಸ್ವಂ ಬುದ್ಧಿಬೋಧಲಕ್ಷಣಾ |

ಲಜ್ಜಾ ಪುಷ್ಟಿಸ್ತಥಾ ತುಷ್ಟಿಸ್ತ್ವಂ ಶಾಂತಿಃ ಕ್ಷಾಂತಿರೇವ ಚ || ೮ ||

ಖಡ್ಗಿನೀ ಶೂಲಿನೀ ಘೋರಾ ಗದಿನೀ ಚಕ್ರೀಣೀ ತಥಾ |

ಶಂಖಿನೀ ಚಾಪಿನೀ ಬಾಣಭುಶುಂಡೀಪರಿಘಾಯುಧಾ || ೯ ||

ಸೌಮ್ಯಾ ಸೌಮ್ಯತರಾಶೇಷಸೌಮ್ಯೇಭ್ಯಸ್ತ್ವತಿಸುಂದರೀ |

ಪರಾಪರಾಣಾಂ ಪರಮಾ ತ್ವಮೇವ ಪರಮೇಶ್ವರೀ || ೧೦ ||

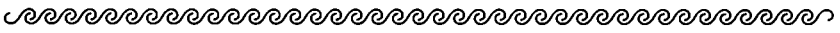
ಯಚ್ಚ ಕಿಂಚಿತ್ತ್ವ ಚಿದ್ವಸ್ತು ಸದಸದ್ವಾಖಿಲಾತ್ಮಿಕೇ |

ತಸ್ಯ ಸರ್ವಸ್ಯ ಯಾ ಶಕ್ತಿಃ ಸಾ ತ್ವಂ ಕಿಂ ಸ್ತೂಯಸೇ ತದಾ || ೧೧ ||

ಯಯಾ ತ್ವಯಾ ಜಗತ್ಪಷ್ಟಾ ಜಗತ್ಪಾತ್ಯತ್ತಿಯೋ ಜಗತ್ |

ಸೋಽಪಿ ನಿದ್ರಾವಶಂ ನೀತಃ ಕಸ್ತ್ವಾಂ ಸ್ತೋತುಮಿಹೇಶ್ವರಃ || ೧೨ ||





ವಿಷ್ಣುಃ ಶರೀರಗ್ರಹಣಮಹಮೀಶಾನ ಏವ ಚ |
 ಕಾರಿತಾಸ್ತೇ ಯತೋಽತಸ್ತ್ವಾಂ ಕಃ ಸ್ತೋತುಂ ಶಕ್ತಿಮಾನ್ಯವೇತ್ || ೧೩ ||

ಸಾ ತ್ವಮಿತ್ಥಂ ಪ್ರಭಾವೈಃ ಸ್ವೈರುದಾರೈರ್ದೇವಿ ಸಂಸ್ತುತಾ |
 ಮೋಹಯೈತೌ ದುರಾಧರ್ಷಾವಸುರೌ ಮಧುಕೈಟಭೌ || ೧೪ ||

ಪ್ರಬೋಧಂ ಚ ಜಗತ್ಸ್ವಾಮೀ ನೀಯತಾಮಚ್ಯುತೋ ಲಘು |
 ಬೋಧಶ್ಚಕ್ರಿಯತಾಮಸ್ಯ ಹಂತುಮೇತೌ ಮಹಾಸುರೌ || ೧೫ ||

|| ಇತಿ ರಾತ್ರಿಸೂಕ್ತಮ್ ||

|| ಅಥ ಮಹಿಷಾಂತಕರೀ-ಸೂಕ್ತಮ್ ||

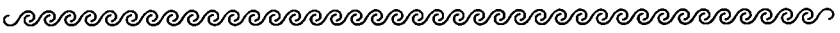
'ಓಂ' ಯುಷಿರುವಾಚ

ಶಕ್ರಾದಯಃ ಸುರಗುಣಾ ನಿಹತೇಽತಿವೀರ್ಯೇ
 ತಸ್ಮಿನ್ನದಾತ್ಮನಿ ಸುರಾರಿಬಲೇ ಚ ದೇವ್ಯಾ |
 ತಾಂ ತುಷ್ಟುವುಃ ಪ್ರಣತಿನಮ್ರಶಿರೋಧರಾಂಸಾ
 ವಾಗ್ನಿಃ ಪ್ರಹರ್ಷಪುಲಕೋದ್ಗಮಚಾರುದೇಹಾಃ || ೧ ||

ದೇವ್ಯಾ ಯಯಾ ತತಮಿದಂ ಜಗದಾತ್ಮಶಕ್ತ್ಯಾ
 ನಿಶ್ಯೇಷದೇವಗಣಶಕ್ತಿಸಮೂಹಮೂರ್ತ್ಯಾ |
 ತಾಮಂಬಿಕಾಮಖಿಲದೇವಮಹರ್ಷಿಪೂಜ್ಯಾಂ
 ಭಕ್ತ್ಯಾನತಾಃ ಸ್ಮವಿದಧಾತು ಶುಭಾನಿ ಸಾ ನಃ || ೨ ||

ಯಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಭಾವಮತುಲಂ ಭಗವಾನನಂತೋ
 ಬ್ರಹ್ಮಾಹರಶ್ಚನ ಹಿ ವಕ್ತುಮಲಂ ಬಲಂ ಚ |
 ಸಾ ಚಂಡಿಕಾಖಿಲಜಗತ್ತರಿಪಾಲನಾಯ
 ನಾಶಾಯ ಚಾಶುಭಭಯಸ್ಯ ಮತಿಂ ಕರೋತು || ೩ ||





ಯಾ ಶ್ರೀಃ ಸ್ವಯಂ ಸುಕೃತಿನಾಂ ಭವನೇಷ್ವಲಕ್ಷ್ಮೀಃ
 ಪಾಪಾತ್ಮನಾಂ ಕೃತಧಿಯಾಂ ಹೃದಯೇಷು ಬುದ್ಧಿಃ |
 ಶ್ರದ್ಧಾ ಸತಾಂ ಕುಲಜನಪ್ರಭವಸ್ಯ ಲಜ್ಜಾ
 ತಾಂ ತ್ವಾಂ ನತಾಃ ಸ್ಮ ಪರಿಪಾಲಯ ದೇವಿ ವಿಶ್ವಮ್ || ೪ ||

ಕಿಂ ವರ್ಣಯಾಮ ತವ ರೂಪಮಚಿಂತ್ಯಮೇತತ್
 ಕಿಂ ಚಾತಿವೀರ್ಯಮಸುರಕ್ಷಯಕಾರಿ ಭೂರಿ |
 ಕಿಂ ಚಾಹವೇಷು ಚರಿತಾನಿ ತವಾದ್ಭುತಾನಿ
 ಸರ್ವೇಷು ದೇವ್ಯಸುರದೇವಗಣಾದಿಕೇಷು || ೫ ||

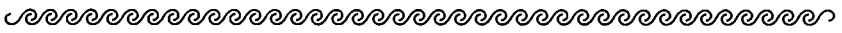
ಹೇತುಃ ಸಮಸ್ತಜಗತಾಂ ತ್ರಿಗುಣಾಪಿ ದೋಷೈ-
 ನ್ನ ಜ್ಞಾಯಸೇ ಹರಿಹರಾದಿಭಿರಪ್ಯಪಾರಾ |
 ಸರ್ವಾಶ್ರಯಾಖಿಲಮಿದಂ ಜಗದಂಶಭೂತ-
 ಮವ್ಯಾಕೃತಾ ಹಿ ಪರಮಾ ಪ್ರಕೃತಿಸ್ತ್ವಮಾದ್ಯಾ || ೬ ||

ಯಸ್ಯಾಃ ಸಮಸ್ತಸುರತಾ ಸಮುದೀರಣೇನ
 ತೃಪ್ತಿಂ ಪ್ರಯಾತಿ ಸಕಲೇಷು ಮಖೇಷು ದೇವಿ |
 ಸ್ವಾಹಾಸಿ ವೈ ಪಿತೃಗಣಸ್ಯ ಚ ತೃಪ್ತಿಹೇತು-
 ರುಚ್ಚಾರ್ಯಸೇ ತ್ವಮತ ಏವ ಜನೈಃ ಸ್ವಧಾ ಚ || ೭ ||

ಯಾ ಮುಕ್ತಿಹೇತುರವಿಚಿಂತ್ಯ ಮಹಾವ್ರತಾ ತ್ವ-
 ಮಭ್ಯಸ್ಯಸೇ ಸುನಿಯತೇಂದ್ರಿಯ ತತ್ತ್ವಸಾರೈಃ |
 ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿಭಿರ್ಮುನಿಭಿರಸ್ತಮಸ್ತದೋಷೈ
 ವಿಧ್ಯಾಸಿ ಸಾ ಭಗವತೀ ಪರಮಾ ಹಿ ದೇವಿ || ೮ ||

ಶಬ್ದಾತ್ಮಿಕಾ ಸುವಿಮಲಗೃಜುಷಾಂ ನಿಧಾನ-
 ಮುದ್ಗೇಢ ರಮ್ಯಪದಪಾಠವತಾಂ ಚ ಸಾಮ್ನಾಮ್ |
 ದೇವೀ ತ್ರಯೀ ಭಗವತೀ ಭವಭಾವನಾಯ
 ವಾರ್ತಾ ಚ ಸರ್ವಜಗತಾಂ ಪರಮಾರ್ತಿಹಂತ್ರೀ || ೯ ||





ಮೇಧಾಸಿ ದೇವಿ ವಿದಿತಾಖಿಲಶಾಸ್ತ್ರಸಾರಾ

ದುರ್ಗಾಸಿ ದುರ್ಗಭವಸಾಗರನಾರಸಂಗಾ |

ಶ್ರೀ: ಕೈಟಭಾರಿಹೃದಯೈಕಕೃತಾಧಿವಾಸಾ

ಗೌರೀ ತ್ವಮೇವ ಶಶಿಮಾಲಿಕೃತಪ್ರತಿಷ್ಠಾ

|| ೧೦ ||

ಈಷತ್ತಹಾಸಮಮಲಂ ಪರಿಪೂರ್ಣಚಂದ್ರ-

ಬಿಂಬಾನುಕಾರಿ ಕನಕೋತ್ತಮಕಾಂತಿಕಾಂತಮ್ |

ಅತ್ಯದ್ಭುತಂ ಪ್ರಹೃತಮಾತ್ಮರುಷಾ ತಥಾಪಿ

ವಕ್ತ್ರಂ ವಿಲೋಕ್ಯ ಸಹಸಾ ಮಹಿಷಾಸುರೇಣ

|| ೧೧ ||

ದೃಷ್ಟ್ವಾ ತು ದೇವಿ ಕುಪಿತಂ ಭುಕುಟೀಕರಾಲ-

ಮುದ್ಯಚ್ಚಶಾಂಕಸದೃಶಚ್ಚವಿ ಯನ್ನಸದ್ಯಃ |

ಪ್ರಾಣಾನುಮೋಚ ಮಹಿಷಸ್ತದತೀವ ಚಿತ್ರಂ

ಕೈರ್ಜೀವ್ಯತೇ ಹಿ ಕುಪಿತಾಂತಕದರ್ಶನೇನ

|| ೧೨ ||

ದೇವಿ ಪ್ರಸೀದ ಪರಮಾ ಭವತೀ ಭವಾಯ

ಸದ್ಯೋ ವಿನಾಶಯಸಿ ಕೋಪವತೀ ಕುಲಾನಿ |

ವಿಜ್ಞಾತಮೇತದಧುನೈವ ಯದಸ್ತಮೇತ-

ನ್ನೀತಂ ಬಲಂ ಸುವಿಪುಲಂ ಮಹಿಷಾಸುರಸ್ಯ

|| ೧೩ ||

ತೇ ಸಮೃತಾ ಜನಪದೇಷು ಧನಾನಿ ತೇಷಾಂ

ತೇಷಾಂ ಯಶಾಂಸಿ ನ ಚ ಸೀದತಿ ಧರ್ಮವರ್ಗಃ |

ಧನ್ಯಾಸ್ತುವಿವ ನಿಭೃತಾತ್ಮಜಭೃತ್ಯದಾರಾ

ಯೇಷಾಂ ಸದಾಭ್ಯುದಯದಾ ಭವತೀ ಪ್ರಸನ್ನಾ

|| ೧೪ ||

ಧರ್ಮ್ಯಾಣಿ ದೇವಿ ಸಕಲಾನಿ ಸದೈವ ಕರ್ಮಾಣ್ಯ-

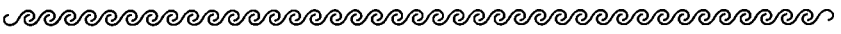
ತ್ಯಾದೃತಃ ಪ್ರತಿದಿನಂ ಸುಕೃತೀ ಕರೋತಿ |

ಸ್ವರ್ಗಂ ಪ್ರಯಾತಿ ಚ ತತೋ ಭವತೀಪ್ರಸಾದಾ-

ಲ್ಲೋಕತ್ರಯೇಽಪಿ ಫಲದಾ ನನು ದೇವಿ ತೇನ

|| ೧೫ ||





ದುರ್ಗೇ ಸ್ತೃತಾ ಹರಸಿ ಭೀತಿಮಶೇಷಜಂತೋಃ

ಸ್ವಸ್ಥೈಃ ಸ್ತೃತಾ ಮತಿಮತೀವ ಶುಭಾಂ ದದಾಸಿ |

ದಾರಿದ್ರ್ಯದುಃಖಭಯಹಾರಿಣಿ ಕಾ ತ್ವದನ್ಯಾ

ಸರ್ವೋಪಕಾರಕರಣಾಯ ಸದಾ ಸ್ತದ್ರಚಿತ್ತಾ || ೧೬ ||

ಏಭಿರ್ಹೃತ್ಯೈರ್ಗದುಪೈತಿ ಸುಖಂ ತಥೈತೇ

ಕುರ್ವಂತು ನಾಮ ನರಕಾಯ ಚಿರಾಯ ಪಾಪಮ್ |

ಸಂಗ್ರಾಮಮೃತ್ಯುಮಧಿಗಮ್ಯ ದಿವಂ ಪ್ರಯಾಂತು

ಮತ್ಪ್ರೇತಿ ನೂನಮಹಿತಾನ್ವಿನಿಹಂಸಿ ದೇವಿ || ೧೭ ||

ದೃಷ್ಟ್ವೈವ ಕಿಂ ನ ಭವತೀ ಪ್ರಕರೋತಿ ಭಸ್ಮ

ಸರ್ವಾಸುರಾನರಿಷು ಯತ್ಕೃಣೋಷಿ ಶಸ್ತ್ರಮ್ |

ಲೋಕಾನ್ವಯಾಂತು ರಿಪವೋಽಪಿ ಹಿ ಶಸ್ತ್ರಪೂತಾ

ಇತ್ಥಂ ಮತಿರ್ಭವತಿ ತೇಷ್ವಪಿ ತೇಽತಿಸಾಧ್ವೀ || ೧೮ ||

ಖಡ್ಗಪ್ರಭಾನಿಕರವಿಸ್ಫುರಣೈಸ್ತಥೋಗೈಃ

ಶೂಲಾಗ್ರಕಾಂತಿನಿವಹೇನ ದೃಶೋಸುರಾಣಾಮ್ |

ಯನ್ನಾಗತಾ ವಿಲಯಮಂಶುಮದಿಂದುಖಂಡ-

ಯೋಗ್ಯಾನನಂ ತವ ವಿಲೋಕಯತಾಂ ತದೇತತ್ || ೧೯ ||

ದುವ್ಯತ್ತವೃತ್ತಶಮನಂ ತವ ದೇವಿ ಶೀಲಂ

ರೂಪಂ ತಥೈತದವಿಚಿಂತ್ಯಮತುಲ್ಯಮನ್ಯೈಃ |

ವೀರ್ಯಂ ಚ ಹಂತ್ರಹೃತದೇವಪರಾಕ್ರಮಾಣಾಂ

ವೈರಿಷ್ವಪಿ ಪ್ರಕಟಿತೈವ ದಯಾ ತ್ವಯೇತ್ಥಮ್ || ೨೦ ||

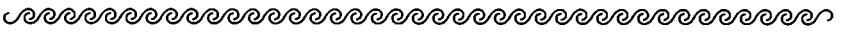
ಕೇನೋಪಮಾ ಭವತು ತೇಽಸ್ಯ ಪರಾಕ್ರಮಸ್ಯ

ರೂಪಂ ಚ ಶತ್ರುಭಯಕಾರ್ಯತಿಹಾರಿ ಕುತ್ರ |

ಚಿತ್ತೇ ಕೃಪಾ ಸಮರನಿಷ್ಠೂರತಾ ಚ ದೃಷ್ಟ್ವಾ

ತ್ವಯೈವ ದೇವಿ ವರದೇ ಭುವನತ್ರಯೇಽಪಿ || ೨೧ ||





ತೈಲೋಕ್ಯಮೇತದಖಿಲಂ ರಿಪುನಾಶನೇನ

ತ್ರಾತಂ ತ್ವಯಾ ಸಮರಮೂರ್ಧನಿ ತೇಽಪಿ ಹತ್ವಾ |

ನೀತಾ ದಿವಂ ರಿಪುಗಣಾ ಭಯಮಪ್ಯಪಾಸ್ತಮಸ್ಮಾಕ -

ಮುನ್ಮದಸುರಾರಿಭವಂ ನಮಸ್ತೇ || ೨೨ ||

ಶೂಲೇನ ಪಾಹಿ ನೋ ದೇವಿ ಪಾಹಿ ಖಡ್ಗೇನ ಚಾಂಬಿಕೇ |

ಘಂಟಾಸ್ವನೇನ ನಃ ಪಾಹಿ ಚಾಪಚ್ಯಾನಿಸ್ವನೇನ ಚ || ೨೩ ||

ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ರಕ್ಷಪ್ರತೀಚ್ಯಾಂ ಚ ಚಂಡಿಕೇ ರಕ್ಷದಕ್ಷಿಣೇ |

ಭ್ರಾಮಣೇನಾತ್ಮಶೂಲಸ್ಯ ಉತ್ತರಸ್ಯಾಂ ತಥೇಶ್ವರಿ || ೨೪ ||

ಸೌಮ್ಯಾನಿ ಯಾನಿ ರೂಪಾಣಿ ತೈಲೋಕ್ಯೇ ವಿಚರಂತಿ ತೇ |

ಯಾನಿ ಚಾತ್ಯರ್ಥಘೋರಾಣಿ ತೈ ರಕ್ಷಾಸ್ತಾಂಸ್ತಥಾ ಭುವಮ್ || ೨೫ ||

ಖಡ್ಗಶೂಲಗದಾದೀನಿ ಯಾನಿ ಚಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ತೇಽಂಬಿಕೇ |

ಕರಪಲ್ಲವಸಂಗೀನಿ ತೈರಸ್ಮಾನ್ ರಕ್ಷಸರ್ವತಃ || ೨೬ ||

|| ಶ್ರೀ ದುರ್ಗಾಸಪ್ತಶತೀ ಚತುರ್ಥ ಅಧ್ಯಾಯದಿಂದ ||

|| ಅಥ ಅಪರಾಜಿತಾಸ್ತೋತ್ರಮ್ ||

ದೇವಾ ಊಚುಃ

ನಮೋ ದೇವೈ ಮಹಾದೇವೈ ಶಿವಾಯೈ ಸತತಂ ನಮಃ |

ನಮಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯೈ ಭದ್ರಾಯೈ ನಿಯತಾಃ ಪ್ರಣತಾಃ ಸ್ಮತಾಮ್ || ೧ ||

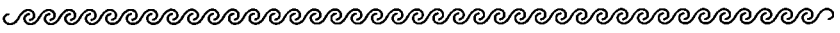
ರೌದ್ರಾಯೈ ನಮೋ ನಿತ್ಯಾಯೈ ಗೌರ್ಯೈ ಧಾತ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ |

ಜ್ಯೋತ್ಸಾಯೈ ಚೇಂದುರೂಪಿಣ್ಯೈ ಸುಖಾಯೈ ಸತತಂ ನಮಃ || ೨ ||

ಕಲ್ಯಾಣ್ಯೈ ಪ್ರಣತಾಂ ವೃದ್ಧೈಸ್ಸಿದ್ಧೈ ಕುರ್ಮೋ ನಮೋ ನಮಃ |

ನೈರ್ಮತ್ಯೈ ಭೂಭೃತಾಂ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯೈ ಶರ್ವಾಣ್ಯೈತೇ ನಮೋ ನಮಃ || ೩ ||





ದುರ್ಗಾಯೈ ದುರ್ಗಪಾರಾಯೈ ಸಾರಾಯೈ ಸರ್ವಕಾರಿಣ್ಯೈ |

ಖ್ಯಾತ್ಯೈ ತಥೈವ ಕೃಷ್ಣಾಯೈ ಧೂಮ್ರಾಯೈ ಸತತಂ ನಮಃ

|| ೪ ||

ಅತಿಸೌಮ್ಯಾತಿರೌದ್ರಾಯೈ ನತಾಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ |

ನಮೋ ಜಗತ್ತತಿಷ್ಠಾಯೈ ದೇವ್ಯೈ ಕೃತ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೫ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ವಿಷ್ಣುಮಾಯೇತಿ ಶಬ್ದತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೬ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಚೇತನೇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೭ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಬುದ್ಧಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೮ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ನಿದ್ರಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೯ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಕ್ಷುಧಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೧೦ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಛಾಯಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೧೧ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಶಕ್ತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೧೨ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ತೃಷ್ಣಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

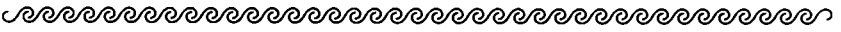
|| ೧೩ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಕ್ಷಾಂತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |

ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ

|| ೧೪ ||





ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಜಾತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೧೫ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಲಜ್ಜಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೧೬ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಶಾಂತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೧೭ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಶ್ರದ್ಧಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೧೮ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಕಾಂತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೧೯ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಲಕ್ಷ್ಮೀರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೦ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ವೃತ್ತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೧ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಸ್ಮೃತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೨ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ದಯಾರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೩ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ತುಷ್ಟಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೪ ||

ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಮಾತೃರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೫ ||





ಯಾ ದೇವೀ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಭ್ರಾಂತಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಥಿತಾ |
 ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೬ ||

ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಮಧಿಷ್ಠಾತ್ರೀ ಭೂತಾನಾಂ ಚಾಖಿಲೇಷು ಯಾ |
 ಭೂತೇಷು ಸತತಂ ತಸ್ಯೈವ್ಯಾಪ್ತಿದೇವ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೭ ||

ಚಿತಿರೂಪೇಣ ಯಾ ಕೃತ್ಸ್ಮೇತದ್ವ್ಯಾಪ್ಯ ಸ್ಥಿತಾ ಜಗತ್ |
 ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮಸ್ತಸ್ಯೈ ನಮೋ ನಮಃ || ೨೮ ||

ಸ್ತುತಾ ಸುರೈಃ ಪೂರ್ವಮಭೀಷ್ಟಸಂಶ್ರಯಾ -
 ತ್ತಥಾಸುರೇಂದ್ರೇಣ ದಿನೇಷು ಸೇವಿತಾ |
 ಕರೋತು ಸಾ ನಃ ಶುಭಹೇತುರೀಶ್ವರೀ
 ಶುಭಾನಿ ಭದ್ರಾಣ್ಯಭಿಹಂತು ಚಾಪದಃ || ೨೯ ||

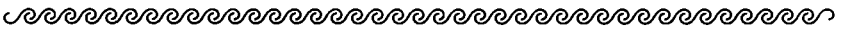
ಯಾ ಸಾಂಪ್ರತಂ ಚೋದ್ಧತದೈತ್ಯತಾಪಿತ್ಯೈ -
 ರಸ್ಮಾಭಿರೀಶಾ ಚ ಸುರೈರ್ನಮಸ್ಯತೇ |
 ಯಾ ಚ ಸ್ಮೃತಾ ತತ್ಕ್ಷಣಮೇವ ಹಂತಿನಃ
 ಸರ್ವಾಪದೋ ಭಕ್ತಿವಿನಮ್ರಮೂರ್ತಿಭಃ || ೩೦ ||

(ಶ್ರೀ ದುರ್ಗಾಸಪ್ತತೀ ಪಂಚಮ ಅಧ್ಯಾಯದಿಂದ)

|| ಅಥ ನಾರಾಯಣೀ-ಸೂಕ್ತಮ್ ||

‘ಓಂ’ ಋಷಿರುವಾಚ
 ದೇವ್ಯಾ ಹತೇ ತತ್ರ ಮಹಾಸುರೇಂದ್ರೇ
 ಸೇಂದ್ರಾಃ ಸುರಾ ವಹ್ನಿಪುರೋಗಮಾಸ್ತಾಮ್ |
 ಕಾತ್ಯಾಯನೀಂ ತುಷ್ಟುವುರಿಷ್ಠಲಾಭಾದ್
 ವಿಕಾಶಿವಕ್ತ್ರಾಬ್ಜವಿಕಾಶಿತಾಶಾಃ || ೧ ||





ದೇವಿ ಪ್ರಪನ್ನಾರ್ತಿಹರೇ ಪ್ರಸೀದ ಪ್ರಸೀದ ಮಾತರ್ಜಗತೋಽಖಿಲಸ್ಯ |
 ಪ್ರಸೀದ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರಿ ಪಾಹಿ ವಿಶ್ವಂ ತ್ವಮೀಶ್ವರೀ ದೇವಿ ಚರಾಚರಸ್ಯ || ೨ ||

ಆಧಾರಭೂತಾ ಜಗತಸ್ತ್ವಮೇಕಾ ಮಹೀಸ್ವರೂಪೇಣ ಯತಃ ಸ್ಥಿತಾಸಿ |
 ಅಪಾಂ ಸ್ವರೂಪಸ್ಥಿತಯಾ ತ್ವಯೈತ-ದಾಪ್ಯಾಯತೇ ಕೃತ್ಸ್ನಮಲಂಘ್ಯವೀರ್ಯೇ || ೩ ||

ತ್ವಂ ವೈಷ್ಣವೀ ಶಕ್ತಿರನಂತವೀರ್ಯಾ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಬೀಜಂ ಪರಮಾಸಿ ಮಾಯಾ |
 ಸಮೋಹಿತಮ್ ದೇವಿ ಸಮಸ್ತಮೇತ-ತ್ತ್ವಂ ವೈ ಪ್ರಸನ್ನಾ ಭುವಿ ಮುಕ್ತಹೇತುಃ || ೪ ||

ವಿದ್ಯಾಃ ಸಮಸ್ತಾಸ್ತವ ದೇವಿ ಭೇದಾಃ ಸ್ಮ್ರಿಯಃ ಸಮಸ್ತಾಃ ಸಕಲಾ ಜಗತ್ಸು |
 ತ್ವಯೈಕಯಾ ಪೂರಿತಮಂಬಯೈತತ್ ಕಾ ತೇ ಸ್ತುತಿಃ ಸ್ತವ್ಯಪರಾ ಪರೋಕ್ತಿಃ || ೫ ||

ಸರ್ವಭೂತಾ ಯದಾ ದೇವೀ ಸ್ವರ್ಗ ಮುಕ್ತಿಪ್ರದಾಯಿನೀ |
 ತ್ವಂ ಸ್ತುತಾ ಸ್ತುತಯೇ ಕಾ ವಾ ಭವಂತು ಪರಮೋಕ್ತಯಃ || ೬ ||

ಸರ್ವಸ್ಯ ಬುದ್ಧಿರೂಪೇಣ ಜನಸ್ಯ ಹೃದಿ ಸಂಸ್ಥಿತೇ |
 ಸ್ವರ್ಗಾಪವರ್ಗದೇ ದೇವಿ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೭ ||

ಕಲಾಕಾಷ್ಠಾದಿರೂಪೇಣ ಪರಿಣಾಮಪ್ರದಾಯಿನಿ |
 ವಿಶ್ವಸ್ಯೋಪರತೌ ಶಕ್ತೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೮ ||

ಸರ್ವಮಂಗಲಮಾಂಗಲ್ಯೇ ಶಿವೇ ಸರ್ವಾರ್ಥಸಾಧಿಕೇ |
 ಶರಣ್ಯೇ ತ್ರ್ಯಂಬಕೇ ಗೌರಿ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೯ ||

ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿವಿನಾಶಾನಾಂ ಶಕ್ತಿಭೂತೇ ಸನಾತನಿ |
 ಗುಣಾಶ್ರಯೇ ಗುಣಮಯೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೦ ||

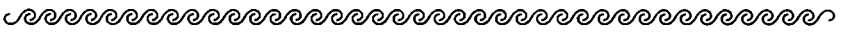
ಶರಣಾಗತದೀನಾರ್ತಪರಿತ್ರಾಣಪರಾಯಣೇ |
 ಸರ್ವಸ್ಯಾರ್ತಿಹರೇ ದೇವಿ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೧ ||





- ಹಂಸಯುಕ್ತವಿಮಾನಸ್ಥೇ ಬ್ರಹ್ಮಾಣೇರೂಪಧಾರಿಣಿ |
ಕೌಶಾಂಭಃಕ್ಷರಿಕೇ ದೇವಿ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೨ ||
- ತ್ರಿಶೂಲಚಂದ್ರಾಹಿಧರೇ ಮಹಾವೃಷಭವಾಹಿನಿ |
ಮಾಹೇಶ್ವರೀಸ್ವರೂಪೇಣ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೩ ||
- ಮಯೂರಕುಕ್ಕುಟವೃತೇ ಮಹಾಶಕ್ತಿಧರೇಽನಘೇ |
ಕೌಮಾರೀರೂಪಸಂಸ್ಥಾನೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೪ ||
- ಶಂಖಚಕ್ರಗದಾಶಾರ್ಙ್ಗಗೃಹೀತಪರಮಾಯುಧೇ |
ಪ್ರಸೀದ ವೈಷ್ಣವೀರೂಪೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೫ ||
- ಗೃಹೀತೋಗ್ರಮಹಾಚಕ್ರೇ ದಂಷ್ಟ್ರೋದ್ಧೃತವಸುಂಧರೇ |
ವರಾಹರೂಪಿಣಿ ಶಿವೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೬ ||
- ನೃಸಿಂಹರೂಪೇಣೋಗ್ರೇಣ ಹಂತುಂ ದೈತ್ಯಾನ್ಯತೋದ್ಯಮೇ |
ತ್ಯಲೋಕೃತ್ಪ್ರಾಣಸಹಿತೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೭ ||
- ಕಿರೀಟಿನಿ ಮಹಾವಜ್ರೇ ಸಹಸ್ರನಯನೋಜ್ಜ್ವಲೇ |
ವೃತ್ರಪ್ರಾಣಹರೇ ಚೈಂದ್ರಿ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೮ ||
- ಶಿವದೂತೀಸ್ವರೂಪೇಣ ಹತದೈತ್ಯಮಹಾಬಲೇ |
ಘೋರರೂಪೇ ಮಹಾರಾವೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೧೯ ||
- ದಂಷ್ಟ್ರಾಕರಾಲವದನೇ ಶಿರೋಮಾಲಾವಿಭೂಷಣೇ |
ಚಾಮುಂಡೇ ಮುಂಡಮಥನೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೦ ||
- ಲಕ್ಷ್ಮಿ ಲಜ್ಜೇ ಮಹಾವಿದ್ಯೇ ಶ್ರದ್ಧೇ ಪುಷ್ಪಿಸ್ವಧೇ ಧ್ರುವೇ |
ಮಹಾರಾತ್ರಿ ಮಹಾಽವಿದ್ಯೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೧ ||
- ಮೇಧೇ ಸರಸ್ವತಿ ವರೇ ಭೂತಿ ಬಾಭ್ರವಿ ತಾಮಸಿ |
ನಿಯತೇ ತ್ವಂ ಪ್ರಸೀದೇಶೇ ನಾರಾಯಣಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೨ ||





ಸರ್ವಸ್ವರೂಪೇ ಸರ್ವೇಶೇ ಸರ್ವಶಕ್ತಿ ಸಮನ್ವಿತೇ |
 ಭಯೇಭ್ಯಸ್ತಾಹಿ ನೋ ದೇವಿ ದುರ್ಗೇ ದೇವಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೩ ||

ಏತತ್ತೇ ವದನಂ ಸೌಮ್ಯಂ ಲೋಚನತ್ರಯಭೂಷಿತಮ್ |
 ಪಾತು ನಃ ಸರ್ವಭೀತಿಭ್ಯಃ ಕಾತ್ಯಾಯನಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೪ ||

ಜ್ವಾಲಾಕರಾಲಮತ್ಯುಗ್ರಮಶೇಷಾಸುರಸೂದನಮ್ |
 ತ್ರಿಶೂಲಂ ಪಾತು ನೋ ಭೀತೇರ್ಭದ್ರಕಾಲಿ ನಮೋಽಸ್ತುತೇ || ೨೫ ||

ಹಿನ್ಸಿದ್ಯೈತ್ಯತೇಜಾಂಸಿ ಸ್ವನೇನಾಪೂರ್ಯ ಯಾ ಜಗತ್ |
 ಸಾ ಘಂಟಾ ಪಾತು ನೋ ದೇವಿ ಪಾಪೇಭ್ಯೋಽನಃ ಸುತಾನಿವ || ೨೬ ||

ಅಸುರಾಸ್ಯಗ್ವಸಾಪಂಕಚರ್ಚಿತಸ್ತೇ ಕರೋಜ್ಜ್ವಲಃ |
 ಶುಭಾಯ ಖಿಡ್ಲೋ ಭವತು ಚಂಡಿಕೇ ತ್ವಾಂ ನತಾ ವಯಮ್ || ೨೭ ||

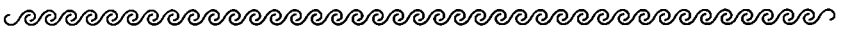
ರೋಗಾನಶೇಷಾನಪಹಂಸಿ ತುಷ್ಟಾ ರುಷ್ಟಾತು ಕಾಮಾನ್ಸಕಲಾನಭೀಷ್ಣಾನ್ |
 ತ್ವಾಮಾಶ್ರಿತಾನಾಂ ನ ವಿಪನ್ನರಾಣಾಂ ತ್ವಾಮಾಶ್ರಿತಾ ಹ್ಯಾಶ್ರಯತಾಂ ಪ್ರಯಾಂತಿ || ೨೮ ||

ಏತಕ್ಕೃತಂ ಯತ್ಕದನಂ ತ್ವಯಾದ್ಯ ಧರ್ಮದ್ವಿಷಾಂ ದೇವಿ ಮಹಾಸುರಾಣಾಮ್ |
 ರೂಪೈರನೇಕೈರ್ಬಹುಧಾಽತ್ಮಮೂರ್ತಿಂ ಕೃತ್ವಾಂಬಿಕೇ ತತ್ ಪ್ರಕರೋತಿ ಕಾನ್ಯಾ || ೨೯ ||

ವಿದ್ಯಾಸು ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ವಿವೇಕದೀಪೇಷ್ಟಾದ್ಯೇಷು ವಾಕ್ಯೇಷು ಚ ಕಾ ತ್ವದನ್ಯಾ |
 ಮಮತ್ಸರ್ಗತೇಽತಿ ಮಹಾಂಧಕಾರೇ ವಿಭ್ರಾಮಯತ್ಯೇತದತೀವ ವಿಶ್ವಮ್ || ೩೦ ||

ರಕ್ಷಾಂಸಿ ಯತ್ರೋಗ್ರವಿಷಾಶ್ಚ ನಾಗಾ ಯತ್ರಾರಯೋ ದಸ್ಯುಬಲಾನಿ ಯತ್ರ |
 ದಾವಾನಲೋ ಯತ್ರ ಯಥಾಬ್ಧಿಮಧ್ಯೇ ತತ್ರ ಸ್ಥಿತಾ ತ್ವಂ ಪರಿಪಾಸಿ ವಿಶ್ವಂ || ೩೧ ||





ವಿಶ್ವೇಶ್ವರಿ ತ್ವಂ ಪರಿಪಾಸಿ ವಿಶ್ವಂ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಿಕಾ ಧಾರಯಸೀತಿ ವಿಶ್ವಮ್ |
 ವಿಶ್ವೇಶವಂದ್ಯಾ ಭವತೀ ಭವಂತಿ ವಿಶ್ವಾಶ್ರಯಾ ಯೇ ತ್ವಯಿ ಭಕ್ತಿನಮ್ರಾಃ |

|| ೨ ||

ದೇವಿ ಪ್ರಸೀದ ಪರಿಪಾಲಯ ನೋಽರಿಭೀತೇ -
 ನಿತ್ಯಂ ಯಥಾಸುರವಧಾದಧುನೈವ ಸದ್ಯಃ |
 ಪಾಪಾನಿ ಸರ್ವಜಗತಾಂ ಪ್ರಶಮಂ ನಯಾಶು
 ಉತ್ತಾಪಾಕಜನಿತಾಂಶ್ಚ ಮಹೋಪಸರ್ಗಾನ್ |

|| ೩ ||

ಪ್ರಣತಾನಾಂ ಪ್ರಸೀದ ತ್ವಂ ದೇವಿ ವಿಶ್ವಾರ್ತಿಹಾರಿಣಿ |
 ತ್ರೈಲೋಕ್ಯವಾಸಿನಾಮೀಡ್ಯೇ ಲೋಕಾನಾಂ ವರದಾ ಭವ

|| ೪ ||

ದೇವ್ಯವಾಚ

ವರದಾಹಂ ಸುರಗಣಾ ವರಂ ಯನ್ಮನಸೇಚ್ಛಥ |
 ತಂ ವ್ಯಣುಧ್ವಂ ಪ್ರಯಚ್ಛಾಮಿ ಜಗತಾಮುಪಕಾರಕಮ್ |

|| ೫ ||

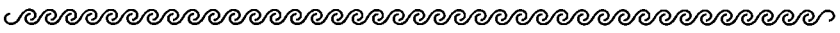
ದೇವಾ ಊಚುಃ

ಸರ್ವಾಬಾಧಾಪ್ರಶಮನಂ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಸ್ಯಾಖಿಲೇಶ್ವರಿ |
 ಏವಮೇವ ತ್ವಯಾ ಕಾರ್ಯಮಸ್ಮದ್ವೈರಿವಿನಾಶನಮ್ |

|| ೬ ||

|| ಶ್ರೀ ದುರ್ಗಾಸಪ್ತತೀ ಏಕಾದಶ ಅಧ್ಯಾಯದಿಂದ ||





॥ ದೇವ್ಯಪರಾಧಕ್ಷಮಾಪನ - ಸ್ತೋತ್ರಮ್ ॥

ನ ಮಂತ್ರಂ ನೋ ಯಂತ್ರಂ ತದಪಿ ಚ ನ ಜಾನೇ ಸ್ತುತಿಮಹೋ
ನ ಚಾಹ್ವಾನಂ ಧ್ಯಾನಂ ತದಪಿ ಚ ನ ಜಾನೇ ಸ್ತುತಿಕಥಾಃ |
ನ ಜಾನೇ ಮುದ್ರಾಸ್ತೇ ತದಪಿ ಚ ನ ಜಾನೇ ವಿಲಪನಂ
ಪರಂ ಜಾನೇ ಮಾತಸ್ತ್ವದನುಸರಣಂ ಕ್ಲೇಶ - ಹರಣಮ್ ॥ ೧ ॥

ವಿಧೇರಜ್ಞಾನೇನ ದ್ರವಿಣವಿರಹೇಣಾಲಸತಯಾ
ವಿಧೇಯಾಶಕ್ಯತ್ವಾತ್ಪವ ಚರಣಯೋರ್ಯಾ ಚ್ಯುತಿರಭೂತ್ |
ತದೇತತ್ ಕ್ಷಂತವ್ಯಂ ಜನನಿ ಸಕಲೋದ್ದಾರಿಣಿ ಶಿವೇ
ಕುಪುತ್ರೋ ಜಾಯೇತ ಕ್ಷಚಿದಪಿ ಕುಮಾತಾ ನ ಭವತಿ ॥ ೨ ॥

ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಪುತ್ರಾಸ್ತೇ ಜನನಿ ಬಹವಃ ಸಂತಿ ಸರಲಾಃ
ಪರಂ ತೇಷಾಂ ಮಧ್ಯೇ ವಿರಲತರಲೋಽಹಂ ತವಸುತಃ |
ಮದೀಯೋಽಯಂ ತ್ಯಾಗಃ ಸಮುಚಿತಮಿದಂ ನೋ ತವ ಶಿವೇ
ಕುಪುತ್ರೋ ಜಾಯೇತ ಕ್ಷಚಿದಪಿ ಕುಮಾತಾ ನ ಭವತಿ ॥ ೩ ॥

ಜಗನ್ನಾತರ್ಮಾತಸ್ತವ ಚರಣಸೇವಾ ನ ರಚಿತಾ
ನ ವಾ ದತ್ತಂ ದೇವಿ ದ್ರವಿಣಮಪಿ ಭೂಯಸ್ತವ ಮಯಾ |
ತಥಾಪಿ ತ್ವಂ ಸ್ನೇಹಂ ಮಯಿ ನಿರುಪಮಂ ಯತ್ಕುರುಷೇ
ಕುಪುತ್ರೋ ಜಾಯೇತ ಕ್ಷಚಿದಪಿ ಕುಮಾತಾ ನ ಭವತಿ ॥ ೪ ॥





ಪರಿತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ದೇವಾನ್ ವಿವಿಧ-ವಿಧ-ಸೇವಾಕುಲತಯಾ
 ಮಯಾ ಪಂಚಾಶೀತೇರಧಿಕಮಪನೀತೇ ತು ವಯಸಿ |
 ಇದಾನೀಂ ಚೇನ್ಮಾತಸ್ತವ ಯದಿ ಕೃಪಾ ನಾಪಿ ಭವಿತಾ
 ನಿರಾಲಂಬೋ ಲಂಬೋದರಜನನಿ ಕಂ ಯಾಮಿ ಶರಣಮ್

|| ೫ ||

ಶ್ವಪಾಕೋ ಜಲ್ಪಾಕೋ ಭವತಿ ಮಧುಪಾಕೋಪಮಗಿರಾ
 ನಿರಾತಂಕೋ ರಂಕೋ ವಿಹರತಿ ಚಿರಂ ಕೋಟಿಕನಕೈಃ |
 ತವಾಪರ್ಣೇ ಕರ್ಣೇ ವಿಶತಿ ಮನುವರ್ಣೇ ಫಲಮಿದಂ
 ಜನಃ ಕೋ ಜಾನೀತೇ ಜನನಿ ಜಪನೀಯಂ ಜಪವಿಧೌ

|| ೬ ||

ಚಿತಾಭಸ್ಮಾಲೇಪೋ ಗರಲಮಶನಂ ದಿಕ್ಪಟಧರೋ
 ಜಟಾಧಾರೀ ಕಂಠೇ ಭುಜಗಪತಿಹಾರೀ ಪಶುಪತಿಃ |
 ಕಪಾಲೀ ಭೂತೇಶೋ ಭಜತಿ ಜಗದೀಶೈಕ - ಪದವೀಂ
 ಭವಾನಿ ತ್ವತ್ - ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ - ಪರಿಪಾಟೀ - ಫಲಮಿದಮ್

|| ೭ ||

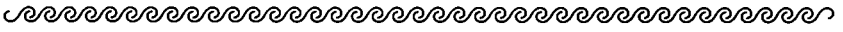
ನ ಮೋಕ್ಷಸ್ಯಾಕಾಂಕ್ಷಾ ಭವವಿಭವವಾಂಭಾಪಿ ಚ ನ ಮೇ
 ನ ವಿಜ್ಞಾನಾಪೇಕ್ಷಾ ಶಶಿಮುಖಿ ಸುಖೇಚ್ಛಾಪಿ ನ ಪುನಃ |
 ಅತಸ್ತ್ವಾಂ ಸಂಯಾಚೇ ಜನನಿ ಜನನಂ ಯಾತು ಮಮ ವೈ
 ಮೃಡಾನೀ ರುದ್ರಾಣೇ ಶಿವ ಶಿವ ಭವಾನೀತಿ ಜಪತಃ

|| ೮ ||

ನಾರಾಧಿತಾಸಿ ವಿಧಿನಾ ವಿವಿಧೋಪಚಾರೈಃ
 ಕಿಂ ರುಕ್ಷಚಿಂತನಪರ್ಯೇನ ಕೃತಂ ವಚೋಭಿಃ |
 ಶ್ಯಾಮೇ ತ್ವಮೇವ ಯದಿ ಕಿಂಚನ ಮಯ್ಯನಾರ್ಥೇ
 ಧತ್ತೇ ಕೃಪಾಮುಚಿತಮಂಬ ಪರಂ ತವೈವ

|| ೯ ||





ಆಪತ್ತು ಮಗ್ನಃ ಸ್ಮರಣಂ ತ್ವದೀಯಂ
ಕರೋಮಿ ದುರ್ಗೇ ಕರುಣಾರ್ಣವೇಶಿವೇ |
ನೈತಚ್ಚ ರತ್ನಂ ಮಮ ಭಾವಯೇಥಾಃ
ಕ್ಷುಧಾತ್ರಷಾರ್ತಾ ಜನನೀಂ ಸ್ಮರಂತಿ

|| ೧೦ ||

ಜಗದಂಬ ವಿಚಿತ್ರಮತ್ರ ಕಿಂ
ಪರಿಪೂರ್ಣಾ ಕರುಣಾಸ್ತಿ ಚೇನ್ಮಯಿ |
ಅಪರಾಧಪರಂಪರಾವೃತಂ, ನ ಹಿ
ಮಾತಾ ಸಮುಪೇಕ್ಷತೇ ಸುತಮ್

|| ೧೧ ||

ಮತ್ಸಮಃ ಪಾತಕೇ ನಾಸ್ತಿ
ಪಾಪಘ್ನೇ ತ್ವತ್ಸಮಾ ನ ಹಿ |
ಏವಂ ಜ್ಞಾತ್ವಾ ಮಹಾದೇವಿ
ಯಥಾ ಯೋಗ್ಯಂ ತಥಾ ಕುರು

|| ೧೨ ||

|| ಇತಿ-ಶ್ರೀಶಂಕರಾಚಾರ್ಯ ವಿರಚಿತಂ ದೇವ್ಯಪರಾಧಕ್ಷಮಾಪನ ಸ್ತೋತ್ರಂ
ಸಂಪೂರ್ಣಂ ||



Shri Chitrāpur Math Publications

PRINTED MATERIAL-BOOKS

- ◆ Swarna Sudha
- ◆ Anthology
- ◆ Sadhana Shrunkhala Devnagari
- ◆ SHRI GURUPARAMPARA CHARITRA Part 1&2 Kannada
- ◆ Dhyana Praveshika
- ◆ Pratyushotsav
- ◆ Anand Bodhamrit Devanagari
- ◆ Anand Bodhamrit English
- ◆ Anugraha
- ◆ Brief History of SCM
- ◆ SCM Brochure
- ◆ Guruparampara Saramrit (Marballi)
- ◆ Shri Guruparampara Charitra Part 1& 2 Devanagari
- ◆ Manache Shloka
- ◆ Nitya Path Kannada
- ◆ Om Namō Jnan Deepaya Kannada
- ◆ Rathotsava (Kannada)
- ◆ Sandhyavandanam Devnagari
- ◆ Sartha Mantra Devnagari
- ◆ Sartha Mantra Kannada
- ◆ Ta ma so ma
- ◆ Samvit Sankeertan Saar Kannada
- ◆ Navratra Nityapath
- ◆ Stuti manjari Devnagari Edition 2011
- ◆ Stuti Manjari Kannada
- ◆ Sadyojat Swadhyay Sudha
- ◆ Guru Poojan
- ◆ Mahashivratri - Devnagri
- ◆ Mahashivratri -Kannada
- ◆ Pad Prakshalan to Phalmantrakshat
- ◆ Sadhana Panchakam Set 1 & 2
- ◆ Stuti Manjari Devnagari
- ◆ Stuti Manjari Kannada
- ◆ Records of S.C.M.





- ◆ Sadguru Bodhamrit
- ◆ Rathotsav English
- ◆ Chitrapur Nityapath
- ◆ Guru Parampara English

ELECTRONIC MEDIA-CDs'/DVDs'/MP3s'

- ◆ Antarangini I
- ◆ Antarangini II
- ◆ Antarangini III
- ◆ Jai Guru Parijnan
- ◆ Stotravali I
- ◆ Stotravali II
- ◆ Stotravali III
- ◆ S.C.M. Nitya Nem
- ◆ Navaratra Nityapath
- ◆ Antarangini IV
- ◆ Gurujyoti Yatra
- ◆ Lalita Sahasranaam
- ◆ Tercentenary Signature Tune
- ◆ Dhyana Praveshika cd Konkani
- ◆ Guru Jyoti Yatra SCM 6 Cds
- ◆ Apar Mahima
- ◆ Parijnan Pravachan
- ◆ Saraswati Yatra
- ◆ Guru parampara CD Naimpalli
- ◆ Guruparampara (Bijur) CD Part 1&2
- ◆ Navavarsha Darshan
- ◆ Gurusmaranam
- ◆ Swadhyaya set of 7 CDs

The Publications are readily available at :

Shri Chitrāpur Math - Shirālī, Bangalore,

Shri Durgā Parameshwarī Temple - Kārālā and at Pūjya Swāmiji's Camps



